शिक्षा में समाजोपयोगी उत्पादक कार्य एवं आधुनिक प्रवृत्तियाँ

राजीव अग्रवाल
प्रियंका गुप्ता
सागर सिंह चौहान

शिक्षा में समाजोपयोगी उत्पादक कार्य एवं आधुनिक प्रवृत्तियाँ

डॉ राजीव अग्रवाल

डीन- शिक्षा संकाय

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

प्रियंका गुप्ता

M.A. (History), M.Ed.

सागर सिंह चौहान

M.A. (English), B.Ed.

प्राक्कथन

शिक्षा समाज में परिवर्तन का सशक्त माध्यम है। पुरानी परम्पराओं का परिमार्जन एवं नवीनीकरण तथा नयी परम्पराओं का समावेश शिक्षा के द्वारा ही होता है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य के मस्तिष्क का विकास इस प्रकार हुआ है कि वह सभी जीवधारियों में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। शिक्षा की प्रक्रिया मनुष्य को सामाजिक कुशलता प्रदान करती है। प्रस्तुत पुस्तक में शिक्षा में समाजोपयोगी उत्पादक कार्य तथा आधुनिक प्रवृत्तियों के विषय में वर्णन किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक को आठ अध्यायों में विभाजित किया गया है-

अध्याय प्रथम- अध्याय प्रथम में अध्ययन विषय से सम्बन्धित प्राथमिक जानकारी, अध्ययन के उद्देश्य, अध्ययन की आवश्यकता, अध्ययन का महत्व, अध्ययन से सम्बन्धित समस्या, समस्या का परिभाषीकरण का वर्णन किया गया है।

अध्याय द्वितीय- द्वितीय अध्याय में अध्ययन से सम्बन्धित साहित्य, समाजोपयोगी उत्पादक कार्य से सम्बन्धित विभिन्न अध्ययनों का वर्णन किया गया है।

अध्याय तृतीय- तृतीय अध्याय में समाजोपयोगी उत्पादक कार्य से सम्बन्धित विभिन्न अवधारणाओं- कोठारी आयोग, ईश्वरभाई पटेल समिति की सिफारिशों का अध्ययन, समाजोपयोगी कार्य के उद्देश्य, समाजोपयोगी कार्य के विभिन्न आधारों- (दार्शनिक, सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक) के विषय में जानकारी प्रदान की गयी है।

अध्याय चतुर्थ- चतुर्थ अध्याय में शोध अभिकल्प- शोध विधि जनसंख्या, प्रतिदर्श, प्रतिदर्श चयन आदि के विषय में बताया गया है।

अध्याय पंचम- अध्याय पंचम में समाजोपयोगी उत्पादक कार्य का वर्तमान परिदृश, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 में शिक्षा का स्वरूप, पुस्तकों का आलोचनात्मक अध्ययन, समाजोपयोगी उत्पादक कार्य के क्षेत्र आदि का वर्णन किया गया है।

अध्याय षष्ठ- अध्याय षष्ठ में समाजोपयोगी स्वानिर्मित वस्तुएँ, पेपर बॉक्स(छोटा), पेपर बॉक्स(बड़ा), फोटो फ्रेम, न्यूज़पेपर फ्लावर बॉक्स,न्यूज़पेपर पेन स्टैंड, न्यूज़पेपर फ्रूट बास्केट, न्यूज़ पेपर वॉल हैंगिंग,न्यूज़पेपर हैंडबैग आदि बनाने की विधि के विषय में जानकारी प्रदान की गयी है।

अध्याय सप्तम- अध्याय सप्तम में उच्च प्राथमिक स्तर, माध्यमिक स्तर एवं उच्च माध्यमिक स्तर में समाजोपयोगी कार्य को पाठ्यक्रम में शामिल करने हेतु सुझावों का वर्णन किया गया है।

अध्याय अष्टम- अध्याय अष्टम में अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों एवं सुझावों का वर्णन किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक लघु शोध प्रबन्ध पर आधारित है। शोध-कार्य के प्रकाशन से वैज्ञानिक ज्ञान भंडार में वृद्धि होती है तथा नवीन अनुसन्धानों को प्रेरणा मिलती है। किसी भी शोध-कार्य का तब तक कोई अर्थ नहीं जब तक वह जनमानस को सुलभ ना हो, प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में एक सार्थक कदम है।

इस पुस्तक के सृजन में संदर्भ-सूची में वर्णित विभिन्न पुस्तकों का सहयोग लिया गया है, हम सभी के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रदर्शित करते हैं।

इस पुस्तक में अनेक त्रुटियां होना स्वाभाविक है। अतः यदि अनुभवी विद्वानगण त्रुटियां अवगत कराने का कष्ट करें तो हम अत्यन्त आभारी होंगे तथा भावी संस्करण में संशोधन का प्रयास करेंगें।

26 जून, 2021

राजीव अग्रवाल
प्रियंका गुप्ता
सागर सिंह चौहान

विषयानुक्रमणिका

अध्याय – प्रथम

अध्ययन परिचय

[Introduction to the Study]

Some valuable quotations on work

- *I believe in work hand work and long heavy hours of work rendered breakdown from over work but from worry and dissipation.*

  --Charles E Hughes

- *Work well done today is the greatest possible half a half to better work tomorrow.*

  --C.M.S

- *The beauty of work depends upon the way we meet it.*

  --Anonymous

- *Work does more to dignify man or the individual than high official or public praise.*

  --Ruskin

- *Work is not only a way to make a living, it is the way to make a living.*

  --Anonymous

- *Work as an investment and almost always pays.*

  --Carleton

- *All work, even spinning is noble, work alone is noble.*

  -- Cartyle

- *Work is not end in itself, through work, one Master must build up character and achieve all round development of his life.*

  -- Subhas Bose

अध्याय प्रथम : अध्ययन परिचय

1.0 प्रस्तावना

[Introduction]

शिक्षा समाज में परिवर्तन का सशक्त माध्यम है | पुरानी मान्यताओं का परिमार्जन एवं नवीनीकरण तथा नवीन विचारों का प्रवेश शिक्षा के माध्यम से ही होता है | शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य के मस्तिष्क का विकास इस प्रकार होता है कि वह अन्य सभी जीवधारियों से अधिक श्रेष्ठ माना जाता है | शिक्षा की प्रक्रिया उसे सामाजिक कुशलता प्रदान करती है | उसके शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, कौशलात्मक गुणों को उजागर कर उसके व्यक्तित्व का विकास करती है | इस प्रकार शिक्षा बालक के सर्वांगीण विकास में योग देती है, संस्कृति को सुरक्षित करती है, भावी पीढ़ी को हस्तान्तरित करती है | शिक्षा से व्यक्ति में सामंजस्य एवं तदात्मता का विकास होना आवश्यक है | शिक्षा के संबंध में विभिन्न शिक्षाविदों के विचार इस प्रकार है-

गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर - "सर्वोच्च शिक्षा वह है जो हमें केवल सूचनाएं नहीं देती वरन हमारे जीवन एवं सम्पूर्ण सृष्टि में तादात्म स्थापित करती है |" (पाण्डेय रामशकल, पृ.11)

पेस्तालोज्ज़ी – "मानव की आन्तरिक शक्तियों का स्वाभाविक, सामंजस्यपूर्ण एवं प्रगतिशील विकास ही शिक्षा है |" (पाण्डेय रामशकल, पृ.10)

"The meaning of education is to emancipate the individual and we need the education of the whole man - Physical, mental, intellectual and spiritual." ***(Webliography-20)***

-Dr.Radhakrishnan

शिक्षा के अति महत्वपूर्ण पहलूओं में से व्यावसायिक कुशलता एवं कौशलात्मक निपुणता एक है | अन्य विभिन्न परिणामों के साथ-साथ सर्वप्रथम गाँधी जी ने व्यावसायिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने वाली शिक्षा की संकल्पना की | उन्होंने बेसिक शिक्षा का एक नया विचार प्रदान किया जो आत्मबल प्रदान करने वाला एक सबल माध्यम था | शिक्षा के संबंध में उनके विचार

मौलिक थे | उन्होंने अपने शिक्षा संबंधी विचार **'हरिजन'** पत्रिका में प्रकाशित करना प्रारम्भ किया, आगे चलकर यही विचार बेसिक शिक्षा योजना का आधार बने |

18 फरवरी सन 1939 ई. 'हरिजन' पत्रिका में उन्होंने कहा - ***"हमारी शिक्षा को क्रांतिकारी हो जाना चाहिए | मस्तिष्क को हाथ के द्वारा शिक्षित करना आवश्यक है, यदि मैं कवि होता तो पांच अंगुलियों की सम्भावनाओं पर कविता लिखता | आप ऐसा क्यों सोचते हैं कि दिमाग ही सब कुछ है, हाथ एवं पैर कुछ नहीं | वह व्यक्ति जो अपने हाथों को प्रशिक्षित नहीं करते हैं वह शिक्षा के अति साधारण मार्ग पर चलते हैं, जिस प्रकार बिना संगीत के जीवन | पुस्तकीय ज्ञान ही बच्चों का सम्पूर्ण ध्यान आकर्षित करने में पर्याप्त नहीं है | शब्दों की शिक्षा थकान को बढ़ाती है तथा बच्चों के मस्तिष्क की क्रियाशीलता को कम करती है | यदि शिक्षा सही एवं गलत के बीच अंतर करना नहीं सिखाती एक को ग्रहण करना दूसरे को त्यागना नहीं सिखाती, तो वह मिथ्या है |"*** ***(position paper p.1)***

शिक्षा [Education] का शाब्दिक अर्थ विद्यार्थियों की आन्तरिक क्षमताओं को उजागर करना है परंतु पुस्तकीय ज्ञान अधिकांशतः वाह्य ज्ञान है, जिसकी प्रवृत्ति वाह्य से आन्तरिक होती है | यह विद्यार्थियों की अभिक्षमताओं को पूर्णता अभिव्यक्ति नहीं देती | अतः आवश्यकता है शैक्षिक पाठ्यक्रम में नवीन क्रियाकलापों के समावेशन की, जिससे विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास हो सके | समय-समय पर विभिन्न समितियों एवं आयोगों ने शिक्षा के स्वरूप में सुधार कर उसे सुदृढ़ बनाने की कोशिश की है | **'बेसिक शिक्षा' [1937 ई.], 'कोठारी कमीशन' [1966 ई.] 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति' [1986 ई.]** ने कार्य प्रधान शिक्षा का समर्थन किया | ये कार्य केवल हाथ से किया गया कार्य नहीं बल्कि विद्यार्थियों के आंतरिक गुणों का उजाकर करने वाला होने चाहिए | ये कार्य कलात्मकता, रचनात्मकता, नृत्य, संगीत, खेल ऐसी ही विभिन्न क्रियाओं में हो सकते है |

अतः शिक्षा केवल ज्ञान प्रधान ही नहीं होनी चाहिए बल्कि उसमे व्यावहारिक उपयोगिता भी होनी चाहिए | विद्यार्थी जीवन में ही उनमे कार्य के प्रति सम्मान की भावना का विकास होना आवश्यक है तथा इस विकास की नींव रखने की जिम्मेदारी परिवार, विद्यालय एवं समुदाय सभी की है | समाजोपयोगी उत्पादक कार्य विद्यार्थियों में सहयोग, क्षमा, धैर्य, सामंजस्य जैसे मूल्यों का विकास कर उनमे सामाजिकता की भावना का विकास करते है | समाजोपयोगी उत्पादक कार्य के

मूल में समाज सेवा की भावना निहित है, यही भावना विद्यार्थियों में राष्ट्र सेवा एवं राष्ट्र प्रेम की भावना को जन्म देगी, तब प्रत्येक विद्यार्थी भारत का आदर्श नागरिक होगा |

1.1 समस्या का आविर्भाव

[Emergence of the Problem]

उद्देश्यों की प्राप्ति में आने वाली कठिनाइयाँ ही समस्या का कारण बनती है | समस्या की अनुभूति उस समय होती है, जब मनुष्य किसी कार्य क्षेत्र विशेष में किसी कार्य के सुचारू संचालन में कठिनाई महसूस करता है | कठिनाई के निवारण हेतु विकल्पों का चयन करता है | मानव की स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि वह बाधाओं में ही समाधान खोजने का प्रयास करता है |

जहाँ विभिन्न शिक्षाविदों ने शिक्षा के वृहद अर्थ प्रस्तुत किये है, वहीं आज एक तरफ शिक्षा सूचना एवं तथ्यों की जानकारी बनकर रह गई है वहीं दूसरी तरफ शिक्षा गुणवत्ता विहीन हो गई है | जिसके पास जितनी अधिक सूचनाएं तथा जानकारी है उसे उतना ही अधिक शिक्षित माना जाता है | उसका मूल्यांकन भी उसी आधार पर किया जाता है | ऐसी शिक्षा मस्तिष्क का विकास तो कर देती है परन्तु विद्यार्थियों के ह्रदय का विकास नहीं कर पाती | उन्हें स्वयं को अभिव्यक्त करने के अवसर प्राप्त नहीं होते | पुस्तकीय ज्ञान को अत्यधिक महत्ता उन्हें सीमित एवं कठोर बना देती है, इस पर भी उस ज्ञान की गुणवत्ता सन्देहास्पद है | घर-परिवार में भी विषय ज्ञान पर ही बल दिया जाता है | हम शिक्षा से शरीर, मन, एवं आत्मा के विकास की बात करते है परन्तु यहाँ यह विचारणीय है कि सम्भावित विकास के लिए उचित पर्यावरण होना आवश्यक है | अनुकूल पर्यावरण के अभाव में सर्वांगीण विकास नहीं हो सकता |

शिक्षा पर 'अन्तर्राष्ट्रीय आयोग' ने शिक्षा एवं कार्य के बीच बढ़ रहे असामान्य विभाजन पर प्रकाश डाला तथा अपनी अनुशंशाओं को **"Learning To Be"** नामक प्रपत्र में प्रकाशित किया | वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में पुस्तकों का अत्यधिक भार है, तथा इस भार को कलात्मकता के साथ साझा करने की आवश्यकता है | इसे उतना ही महत्त्व दिया जाना आवश्यक है, जितना अन्य विषयों को | प्रत्येक विद्यार्थी स्वयं में अद्वितीय है | अतः शैक्षिक पाठ्यक्रम में विभिन्न

क्रियाकलापों का समावेशन आवश्यक है,जिससे उनकी प्रतिभा को अभिव्यक्ति के अवसर प्राप्त हो | इन क्रियाकलापों में सहभागिता से विद्यार्थी अनुभवी एवं कुशल बनेंगे | ऐसे क्रिया-कलाप मनोरंजन के साथ-साथ उत्पादक हो एवं आत्मनिर्भर बनाने में सहायक हो | प्रस्तुत अध्ययन ऐसे ही कुछ विशेष क्रिया-कलापों पर आधारित है |

1.2 समस्या कथन

[Statement of the Problem]

शिक्षा समाजोपयोगी एवं उत्पादक होनी चाहिए | यह विद्यार्थियों के ज्ञान, कौशल को बढ़ाने वाली होनी चाहिए | प्रस्तुत अध्ययन की समस्या दो बिन्दुओं पर आधारित है-

प्रथम - विद्यार्थियों का ज्ञान के साथ-साथ मनोरंजनात्मक कौशल विकास |

द्वितीय - स्वच्छता के प्रति सकारात्मक एवं उपयोगी प्रयास |

प्रस्तुत अध्ययन का समस्या कथन **"शिक्षा में समाजोपयोगी उत्पादक कार्य एवं आधुनिक प्रवृत्तियाँ"** है |

1.3 समस्या में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

[Definition of key terms]

समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण इस प्रकार है –

1.3.1 शिक्षा

गाँधी जी के अनुसार, "शिक्षा से मेरा तात्पर्य उस प्रक्रिया से है जो बालक एवं मनुष्य के शारीर एवं आत्मा के सर्वोत्कृष्ट रूपों को प्रस्फुटित कर दे |" (पाण्डेय, रामशकल पृ.11)

प्लेटो के अनुसार, “शिक्षा से मेरा तात्पर्य उस प्रशिक्षण से है जो बालकों के सदगुणों के मूल प्रवृत्ति के लिए उपयुक्त आदतों के निर्माण द्वारा प्रदान किये जाते है |” (पाण्डेय, रामशकल पृ.10)

हरबार्ट के अनुसार, “शिक्षा नैतिक चरित्र का उचित विकास है |” (पाण्डेय, रामशकल पृ.11)

टॉम्सन के अनुसार, “शिक्षा से मेरा तात्पर्य व्यक्ति के ऊपर वातावरण के उस प्रभाव से है जो उसके व्यवहार, विचार एवं अभिवृत्ति की आदतों में स्थायी परिवर्तन उत्पन्न कर दे |” (पाण्डेय, रामशकल पृ.11)

प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षा से तात्पर्य औपचारिक शिक्षा से है |

1.3.2 समाजोपयोगी उत्पादक कार्य

उपर्युक्त शब्दों का अभिप्राय इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है **(रूहेला, पृष्ठ सं. 22)**

जहाँ -

- सामाजिक से तात्पर्य यह है कि यदि विद्यार्थी ने शिक्षा का न्यूनतम स्तर ग्रहण किया है, तो वह अपने समुदाय के लिए निपुणता से कार्य करने में सक्षम होना चाहिए | उनके द्वारा किया गया कार्य से सामाज की आवश्यकताओं की पूर्ति हो | इसमें अनिवार्य रूप से विद्यार्थियों की आवश्यकताएं एवं रुचियां अंतर्निहित होनी चाहिए क्योंकि विद्यार्थी की महत्वपूर्ण रूचियों में प्रमुख रुप से समाज में प्रभावी सहभागिता, उचित एवं उपयोगी कार्यो का समावेशन होगा |
- उपयोगी से तात्पर्य यह है कि वह कार्य विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में प्रमुख भूमिका निभाने वाला हो, इसके साथ ही साथ सामान्य समूह, समुदाय एवं समाज के लिए लाभदायक होना चाहिए |
- उत्पादक से तात्पर्य यह है कि वह कार्य उत्पाद अथवा सेवा (सूक्षम या स्थूल) के रूप में समुदाय में विद्यमान संसाधनों एवं कार्य प्रणाली का परिवर्धन करने वाला होना चाहिए | मूर्त एवं अमूर्त परिणामों के आधार पर उत्पादकता का मापन किया जा सकता है यह

जीवकोपार्जन से संबंधित होना चाहिए अच्छे मूल्यों एवं अभिवृत्तियों के विकास में योग देने वाला होना चाहिए |

- कार्य से तात्पर्य यह है कि कार्य ऐसे क्रियाकलापों का सम्मलित रूप है जिसमें मानसिक एवं शारीरिक प्रयास शामिल होते हैं तथा यह प्रयास परिणाम के प्राप्त होने तक जारी रहते हैं |

प्रस्तुत शोध समस्या में 'समाजोपयोगी उत्पादक कार्य' से तात्पर्य कुछ विशेष हस्तप्रधान कार्यों से है जिसमें शारीरिक एवं मानसिक दोनों श्रम सम्मिलित हैं तथा विद्यार्थियों के लिए प्रेरणादायक हैं | यें क्रियाकलाप, सौंदर्यपरक, मनोरंजनात्मक, आनन्ददायक, उत्पादक एवं समाज के लिए उपयोगी हैं |

1.3.3 आधुनिक प्रवृत्तियाँ

- आधुनिक से तात्पर्य वर्तमान में प्रचलित विचारधारा से है |
- प्रवृत्ति से आशय धारा अथवा झुकाव से है | समाज में किस ओर अधिक गतिशीलता है, व्यक्ति किस चलन का अनुगमन करते है |

प्रस्तुत अध्ययन में आधुनिक प्रवृत्ति से तात्पर्य वर्तमान में नवीन आयामों से है |

"SUPW may be described as purposive and meaningful manual work resulting in either goods or Services which are meaningful to the society." ***(Ruhela p.21)***

1.4 अध्ययन के उद्देश्य

[Aims of the Study]

प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं -

1. 'नैतिक खेल एवं शारीरिक शिक्षा' तथा 'आलेखन कला' की पाठ्यपुस्तकों में समाजोपयोगी उत्पादक कार्य से संबंधित विषय सामग्री का आलोचनात्मक अध्ययन करना |
2. विद्यार्थियों की कलात्मक प्रतिभा को अभिव्यक्ति का अवसर देना |
3. विद्यार्थियों में समाजोपयोगी उत्पादक कार्य के माध्यम से आत्मनिर्भरता एवं स्वावलंबन के गुणों का विकास करना |
4. अनुपयोगी वस्तुओं में व्यावहारिक उपयोगिता का सृजन करना |
5. समाजोपयोगी उत्पादक कार्य से संबंधित नवीनतम सामग्री का अध्ययन करना |
6. वर्तमान पाठ्य पुस्तकों में समाजोपयोगी उत्पादक से संबंधित नवीन विषय सामग्री के समावेशन हेतु सुझाव देना |
7. विद्यार्थियों में **'करके सीखने'** की अभिवृत्ति का विकास करना |
8. प्रस्तुत अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता चिह्नित करना |

1.5 शोध का सीमांकन

[Limitations of the Study]

प्रत्येक विषय वस्तु अपने आप में विस्तृत है | समय एवं साधनों की उपलब्धता हमारे अध्ययन का स्वरुप निश्चित करती है, इसी स्वरुप में अध्ययन का विकास होता है | सीमांकन अध्ययन का दायरा निश्चित करता है इसी दायरे के अंतर्गत ही अध्ययन का प्रारंभ, विकास एवं समापन होता है | प्रस्तुत शोध का सीमांकन इस प्रकार किया गया है -

1) प्रस्तुत अध्ययन कक्षा 6, 7, 8, एवं 9 में प्रचलित 'आलेखन-कला' तथा 'नैतिक खेल एवं शारीरिक शिक्षा' की पुस्तकों के अध्ययन तक सीमित है |

2) प्रस्तुत अध्ययन में समाजोपयोगी उत्पादक कार्य के विभिन्न प्रकारों में से कागज एवं गत्ते से बनने वाली उपयोगी एवं उत्पादक वस्तुओं के निर्माण तक सीमित है |

3) प्रस्तुत अध्ययन 'अतर्रा' क्षेत्र के आदर्श बाल निकेतन जू. हाई. स्कूल, ब्रह्म विज्ञान इण्टर कॉलेज, तथा 'सरस्वती बालिका इण्टर कॉलेज' के कक्षा 9 के बालिकाओं द्वारा किए गए अभ्यास कार्य तक सीमित है |

4) प्रस्तुत अध्ययन U. P. बोर्ड तक सीमित है |

1.6 अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व

[Need and Significance of the Study]

'करके सीखना' एवं 'अनुभव से सीखना' शिक्षण की सर्वाधिक प्रभावी विधियों में से एक है | विद्यार्थीयों के सर्वांगीण विकास के लिए केवल पुस्तकीय ज्ञान ही आवश्यक नहीं हैं | पुस्तकीय ज्ञान मस्तिष्क को विकसित करता है | मस्तिष्क एवं ह्रदय एक दूसरे के पूरक है | अतः मस्तिष्क एवं ह्रदय दोनों का संतुलित विकास शिक्षा से होना अनिवार्य है | ह्रदय अनुभूति का स्रोत है, जिसके विकास के लिए हमें विद्यार्थियों को उनकी रुचि के अनुसार अवसर उपलब्ध कराना आवश्यक है, जिससे उनके अंतस में छिपी प्रतिभा को अभिव्यक्ति मिल सके | अतः पाठ्यक्रम में मनोरंजनात्मक, कलात्मक, रुचिपूर्ण, उपयोगी एवं उत्पादक क्रियाकलापों समावेशन आवश्यक है | यह क्रियाकलाप पुस्तकीय ज्ञान से उत्पन्न उदासीनता को कम कर विद्यार्थियों में ऊर्जा का संचार करते हैं तथा उनके गुणात्मक स्तर में वृद्धि करते हैं |

समाजोपयोगी उत्पादक कार्य की अवधारणा कार्य एवं शिक्षा के मध्य विद्यमान दूरी को कम करेगी | विद्यार्थियों में सामूहिकता, सहयोग, सामंजस्य, समानता, आत्मीयता आदि गुणों का विकास करेगी | आज विभिन्न विद्यालयों विशेष कर प्राथमिक विद्यालयों में इस प्रकार के क्रियाकलापों का आयोजन किया जाता है, परन्तु उच्च कक्षाओं में भी इनसे से संबंधित क्रियाकलापों का समावेशन आवश्यक है | यह क्रियाकलाप ह्रदय एवं मस्तिष्क दोनों का विकास कर उसे सुदृढ़ बनाने का कार्य करते हैं | उत्पादक कार्यों के माध्यम से विद्यार्थी समाज को अपनी

महत्वपूर्ण सेवाओं को प्रदान कर सकते हैं | समाजोपयोगी उत्पादक कार्य में मानसिक श्रम की अपेक्षा शारीरिक श्रम की प्रधानता है अतः यह सभी स्तर के विद्यार्थियों के लिए महत्वपूर्ण है |

अध्याय - द्वितीय

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

[Review of Related Literature]

अध्याय द्वितीय : सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

2.0 सम्बन्धित साहित्य से अभिप्राय

[Meaning of Related Literature]

मानव की प्रगति स्वभाव से सदैव ही जिज्ञासू रही है | समस्या के समाधान के लिए प्रयासरत मनुष्य उपलब्ध साधनों से उचित विकल्पों की तलाश करता है | हमारा वर्तमान एवं भविष्य कहीं ना कहीं अतीत का परिणाम रहा है, अतः नवीन निष्कर्षों की प्राप्ति के लिए अतीत के अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों का पुनरावलोकन आवश्यक है | शोध की प्रक्रिया में संबंधित साहित्य का अध्ययन एक वैज्ञानिक और महत्वपूर्ण कार्य है | इसका अध्ययन समस्या को गहनता पूर्वक समझने तथा अपनी शोध प्रक्रिया को प्रभावी बनाने की दृष्टि से अत्यन्त आवश्यक है, साथ ही शोधकर्ता अनावश्यक पुनरावृत्ति से बच जाता है | परन्तु कभी-कभी निष्कर्षों की संतुष्टि के लिए नए साधनों की उपलब्धि के संबंध में आंशिक या पूर्ण रूप से पुनरावृत्ति आवश्यक एवं उपयोगी हो जाती है |

गुड, बार तथा स्केट्स के अनुसार - ***"जिस प्रकार योग चिकित्सक के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधि संबंधी आधुनिकतम खोजो से परिचित होता रहे उसी प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु छात्र, अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य करने वाले तथा अनुसंधानकर्ता के लिए भी अनुसंधान क्षेत्र से संबंधित सूचना एवं खोजों से परिचित होना आवश्यक है |"*** ***(सिंह,वीर प्रकाश- पृ.31)***

संबंधित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से संबंधित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञानकोश, पत्र-पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा प्रकाशित शोध प्रबंध एवं अभिलेखों से है जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है |

2.1 समाजोपयोगी उत्पादक कार्य से सम्बन्धित किये गये अध्ययन

[Studies Related to SUPW]

प्रस्तुत अध्ययन की पूर्ति हेतु निम्नलिखित साहित्य का अध्ययन किया गया है -

2.1.1 *भारतीय शिक्षा के आधारभूत मुद्दे (Pivotal Issues in Indian Education, 1984)*

श्रीमान **'एस. के. कोचर'** द्वारा लिखित पुस्तक **"भारतीय शिक्षा के आधारभूत मुद्दे" {Pivotal Issues in Indian Education}** अध्ययन को पूर्ण करने में तथा अवधारणा को समझने में अत्यन्त उपयोगी है | तात्कालिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु इस पुस्तक की रचना की गई | विभिन्न स्त्रोतों से प्राप्त सूचनाओं का इसमें संकलन किया गया है | स्वतंत्रता से पूर्व एवं स्वतंत्रता के पश्चात शिक्षा की रूपरेखा, विभिन्न आयाम तथा समस्याओं को समझने हेतु पुस्तक एक क्रमबद्ध श्रृंखला है | इसमें भारतीय शिक्षा का ऐतिहासिक परिपेक्ष्य, भारतीय संविधान एवं शिक्षा, नर्सरी, प्राथमिक शिक्षा, पाठ्यक्रम संरचना, माध्यमिक शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, सेवा पूर्व शिक्षक शिक्षा, सेवारत शिक्षक शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा, धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा तथा भाषाई समस्याएं एवं समाजोपयोगी उत्पादक कार्य (एसयूपीडब्ल्यू) जैसे विषयों पर विस्तृत विवेचना की गई है |

प्रस्तुत पुस्तक में समाजोपयोगी उत्पादक कार्य की अवधारणा, उत्पत्ति, विभिन्न आयोगों एवं समितियों द्वारा सुझाए गए सुझावों का उल्लेख है | समाजोपयोगी उत्पादक कार्य से तात्पर्य, ईश्वरभाई पटेल कमेटी समिति की संस्तुतियाँ एवं उद्देश्य, विद्यालयी पाठ्यचर्या हेतु क्रियाकलापों का चयन, नियोजित क्रियान्वयन, मूल्यांकन, समाजोपयोगी उत्पादक कार्य से लाभ आदि ऐसे विभिन्न बिंदुओं पर प्रकाश डाला गया है | अतः ऐतिहासिक अवधारणा एवं वर्तमान अवधारणा को समझने हेतु यह पुस्तक अत्यन्त सहायक है |

2.1.2 *कार्यानुभव शिक्षा (Work Experience Education, 2007)*

श्रीमान **'सत्य पाल रूहेला'** द्वारा कृत **'कार्यानुभव शिक्षा' (Work Experience Education 2007)** इस पुस्तक में कार्य एवं इसका महत्व, 'कार्यानुभव' परिभाषा एवं उद्देश्य, समाजोपयोगी उत्पादक कार्य की अवधारणा एवं निहितार्थ, SUPW के ऐतिहासिक, दार्शनिक मनोवैज्ञानिक, सामाजिक आधार, विद्यालयों में क्रियाकलापों का कार्यान्वयन एवं मूल्यांकन आदि बिंदुओं का विवेचन किया गया है |

इस पुस्तक में कोठारी कमीशन द्वारा सुझाए गए शिक्षा में 'कार्यानुभव' की विस्तृत व्याख्या की गई है इसके साथ-साथ 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति' 1986 तथा 'NCERT' द्वारा कार्य से संबंधित दस्तावेजों पर प्रकाश डाला गया है | कार्य एवं शिक्षा के मध्य बढ़ती हुई दूरी पर चिंता व्यक्त करते हुए दूरी को कम करने हेतु यथासंभव प्रयास किए गए हैं | ईश्वर भाई पटेल समिति 1977 द्वारा दी गई समाजोपयोगी उत्पादक कार्य की अवधारणा तथा उद्देश्य विद्यालय की समय सारणी में उत्पादक कार्यों को स्थान आदि कों स्पष्ट किया गया है |

2.1.3 व्यावसायिक शिक्षा (Vocational Education, 2008)

श्रीमान **'तरुण राष्ट्रीय'** द्वारा कृत **'व्यावसायिक शिक्षा' (Vocational Education 2008)** पुस्तक में कोठारी कमीशन के कार्यानुभव पर एक विस्तृत दस्तावेज है इसमें कार्यानुभव को बेसिक शिक्षा, उच्च प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा से संबंधित किया गया है | एनसीईआरटी 1975 द्वारा कार्यानुभव के संबंध में दी गई संस्तुतियाँ तथा कार्य की रूपरेखा, व्यावसायिक शिक्षा, +2 के स्तर से ही विद्यार्थियों को शैक्षिक निर्देशन आदि का विशद वर्णन किया गया है |

2.1.4 *हिमाचल प्रदेश में माध्यमिक स्तर पर समाजोपयोगी उत्पादक कार्य कार्यक्रम : एक मूल्यांकित अध्ययन (Socially useful productive work*

programme at secondary stage in Himachal Pradesh : An Evaluative study) *(Webliography,19)*

श्रीमान **'विमल चरण'** द्वारा लिखित शोध प्रबन्ध **"हिमाचल प्रदेश में माध्यमिक स्तर पर समाजोपयोगी उत्पादक कार्य कार्यक्रम : एक मूल्यांकित अध्ययन" (Socially useful productive work programme at secondary stage in Himachal Pradesh : An Evaluative study)** सन 1992 ई. में प्रस्तुत किया गया |

अध्ययन किए गए लघु शोध में हिमाचल प्रदेश के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में संचालित समाजोपयोगी उत्पादक कार्य कार्यक्रम का मूल्यांकन किया गया है | SUPW से संबंधित अति सूक्ष्म पहलुओं का विस्तार से विवेचन किया गया है | प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक स्तर हेतु एसयूपीडब्ल्यू से संबंधित विभिन्न क्रियाकलापों को चिन्हित किया गया है | ऐतिहासिक एवं वर्णनात्मक विधि का प्रयोग के साथ-साथ विद्यालयों में शिक्षा व्यवस्था को समझने के लिए प्रश्नावली का उपकरण के रूप में प्रयोग करके विद्यालयों की स्थिति को दर्शाया गया है | आधुनिक भारत के विद्यालयों में समाजोपयोगी उत्पादक कार्य के मूल्यांकन की स्थिति पर प्रकाश डाला गया है | भविष्य के लिए महत्वपूर्ण सुझावों को प्रस्तुत कर यह शोध प्रबंध अध्ययन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है |

2.1.5 *Work And Education*

Position Paper National Focus Group on **'Work and Education'** by **NCERT**

इस दस्तावेज का प्रमुख उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा व्यवस्था को दृढ़ बनाने के लिए कार्य की शैक्षणिक भूमिका को उजागर करना है जिसमे भारतीय शिक्षा प्रणाली के ज्वलंत मुद्दों पर विचाराभिव्यक्ति की गई है | इसमें समावेशी शिक्षा, मूल्यांकन पद्धति, कार्य एवं शिक्षा, लैंगिक विषमताएं, अक्षमता की चुनौतियां, व्यावसायिक नीति, पाठ्यक्रम में कार्य की भूमिका आदि बिन्दुओं की विवेचना की गई है |

गाँधी जी की 'नई तालीम' एवं 'कोठारी कमीशन' के 'कार्यानुभव' की अवधारणा को स्पष्ट किया गया है | समाजोपयोगी उत्पादक कार्य के विषय में स्पष्ट करते हुए कहा गया है - **"पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को कक्षा-कक्ष के अन्दर एवं बाहर चलने वाली सामाजिक आर्थिक क्रियाकलापों में सहभागिता के अवसर प्रदान करना है |"**

SUPW की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए कहा गया है -

" SUPW must not be confined four walls of the school, nor can they be provided by the teacher only." (Position Paper, p.21)

प्रस्तुत अध्ययन की प्रतिपूर्ति एवं अवधारणा को समझने में यह दस्तावेज अध्ययन की दृष्टि से अत्यन्त सहायक एवं उपयोगी है |

2.2 निष्कर्ष

[Conclusion]

उपर्युक्त वर्णित सभी (पुस्तकों, शोध एवं दस्तावेज) साहित्य ने अध्ययन को मजबूत ऐतिहासिक आधार प्रदान करने में उपयोगी भूमिका निभाई है | इन सन्दर्भों में समाजोपयोगी उत्पादक कार्य से सम्बन्धित विभिन्न आयामों एवं क्षेत्रों पर दृष्टिपात किया गया है | वर्तमान शिक्षा व्यवस्था से क्या अपेक्षाएं हैं? इस पर भी दृष्टिपात किया गया है | शिक्षा में बढ़ती विषमता को कम करने का प्रयास किया गया है |

यह विचारणीय है कि इन सभी साहित्य एवं दस्तावेजों में समाजोपयोगी उत्पादक कार्य से सम्बन्धित क्रियाकलापों के प्रयोगात्मक अनुप्रयोगों का आभाव है | अतः प्रस्तुत अध्ययन इन सभी साहित्यों से उपयोगी सामग्री लेते हुए, वर्तमान शिक्षा व्यवस्था का अध्ययन कर, विद्यालयी पाठ्यक्रम में समाजोपयोगी मनोरंजनात्मक निर्माण कार्य से सम्बन्धित है |

अध्याय - तृतीय

अध्ययन विवेचना

[Deliberation of the Study]

अध्याय – तृतीय : अध्ययन विवेचना

3.0 शिक्षा में समाजोपयोगी उत्पादक कार्य की अवधारणा

[Concept of Socially Useful Productive Work in Education]

शिक्षा में समाजोपयोगी उत्पादक कार्य की अवधारणा भारतीय शिक्षा की आधुनिक अवधारणाओं में से एक है | यह महात्मा गांधी के विचारों के रूप में विकसित हुई, जिसमें कार्य केंद्रित शिक्षा पर जोर दिया गया | इस प्रकार के कार्य समाज के लिए व्यावहारिक उपयोगिता रखते हैं | गाँधीजी की बेसिक शिक्षा योजना का प्रमुख उद्देश्य ग्रामीण समाज का सामाजिक पुनरुद्धार करना था, इसमें गाँधी जी ने प्राथमिक विद्यालयों में विभिन्न प्रकार के हस्त प्रधान क्रियाकलापों के आयोजन की बात कही | इन क्रिया-कलापों के माध्यम से विद्यार्थियों को सामाजिक उपयोगिता एवं उत्पादकता से संबंधित अनुभव प्रदान किए जा सकें | इस विचारधारा का प्रमुख उद्देश्य यह था कि प्रारम्भिक अवस्था में ही विद्यार्थी अपने समाज की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक आवश्यकताओं आशाओं एवं महत्वकांक्षाओं को वास्तविक रुप से समझ सके |

समाजोपयोगी उत्पादक कार्य भारतीय विद्यालयों का वह विषय है, जहां विद्यार्थी विभिन्न व्यावसायिक शिक्षा सम्बन्धी क्रियाकलापों यथा बुनाई, बागवानी, पाक कला, चित्र कला तथा अन्य हस्तशिल्प क्रियाओं में से किसी एक क्रिया का चयन करते हैं | इन विभिन्न क्रियाकलापों में विद्यार्थी समूह के रुप में कुशलता एवं गहनता से कार्य करना सीखते हैं | यह विचारधारा सन 1978 ई. में शिक्षा मंत्रालय द्वारा गाँधीवादी मूल्य तथा उनके शैक्षिक विचारों को बढ़ावा देने हेतु प्रकाश में आई | विद्यार्थियों में व्यक्तिगत कौशल का विकास करते हुए समाजोपयोगी उत्पादक कार्य का उद्देश्य समुदाय के रूप में कार्य करने की आदत का विकास करना, सामुदायिक विचारधारा को प्रोत्साहन देना, वैज्ञानिक प्रगति के प्रति जागरूकता को बढ़ाना तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करना है |

3.0.1 बेसिक शिक्षा में समाजोपयोगी उत्पादक कार्य

[Socially Useful Productive Work in Basic Education]

स्वतंत्रता से पूर्व गांधी जी एक ऐसी शिक्षा की रूपरेखा प्रस्तुत की जो हस्त शिल्प के माध्यम से दी जाती थी | उन्होंने अपने वक्तव्य (1937 ई.) में कहा –

"मेरे विचार का सन्दर्भ केवल इतना है कि शिल्पकला के माध्यम से केवल उत्पादन कार्य को ही ना बढ़ाया जाए बल्कि यह विद्यार्थियों के बौद्धिक स्तर का भी विकास करें, सेवाग्राम में स्थित शिक्षकों से इस बात पर जोर दिया गया कि शिक्षा अनिवार्य रूप से व्यावसायिक एवं कार्य प्रधान गतिविधियों पर आधारित होकर वृत्ताकार पथ पर गति करें | जब हम कपास की गांठ लेते हैं, इसके बीजों को साफ करते हैं, इसकी धूल को साफ करते हैं, धुनाई करते हैं, धागा निकालते हैं, तथा कपड़ा बुनते हैं, तो उस वक्त कृषि, उद्योग, इतिहास एवं भूगोल, अर्थशास्त्र एवं राजनीतिशास्त्र भी उस एक हस्तशिल्प के माध्यम से पढ़ाया जा सकता है |" ***(Kochar,p.147)***

गांधीजी की बुनियादी शिक्षा की अवधारणा विद्यार्थियों में आत्मनिर्भरता एवं स्वावलंबन का गुण विकसित करने वाली थी | प्रभावशाली विचारधारा होते हुए भी यह शिक्षा व्यवहारिक रुप से सफल नहीं हो पाई |

3.0.2 भारतीय शिक्षा आयोग [1964-66] में 'कार्यानुभव'

['Work Experience' in Indian Education commission]

कोठारी आयोग ने सन 1966 ई. में 'कार्यानुभव' की बात कही आयोग ने कार्यानुभव पर जोर देते हुए कहा - ***"Work Experience has been defined as a participation in productive work in school, in the home, in the workshop, on a farm, in a factory in any productive situation." (Ruhela, chepter,2)***

कोठारी आयोग ने 'कार्यानुभव' के निम्न उद्देश्य प्रस्तुत किए -

1. कार्य के प्रति उचित दृष्टिकोण का विकास |
2. श्रम के प्रति सम्मान की भावना रखना |
3. वर्ग एवं स्थिति से संबंधित भेदभाव को दूर करना |
4. उत्पादकता के सिद्धांत पर जोर देना |
5. विद्यार्थियों में किसी निश्चित लाभदायक अभिक्षमता का विकास करना |

आत्मनिर्भरता तथा स्वावलंबन की विचारधारा होते हुए भी कार्यानुभव इसलिए सफल नहीं हो सका क्योंकि उस विचारधारा में सामाजिक उपयोगिता की कमी थी और व्यावहारिक रूप से इसे अन्य विषयों से संबंधित नहीं किया जा सका |

3.1 समाजोपयोगी उत्पादक कार्य का परिवर्तित रूप

[Changing Form of SUPW]

कुछ वर्षों पश्चात सन 1978 ई. में ईश्वरभाई पटेल समिति ने समाजोपयोगी उत्पादक कार्य शब्दावली का प्रयोग किया तथा इसे +2 अधिगम स्तर पर दी जाने वाली सामान्य शिक्षा का ही एक हिस्सा कहा | समिति ने इसका आधार गाँधीवादी दर्शन तथा बुनियादी शिक्षा बताते हुए कहा – **"सभी स्तर की विद्यालय शिक्षा के केंद्र में अवश्य ही समाजोपयोगी उत्पादक कार्य को स्थान दिया जाना चाहिए तथा शैक्षिक विषयों को जितना संभव हो सके इससे संबंधित किया जाना चाहिए |"** ***(Pivotal, p.148)*** कार्यानुभव के स्थान से समाजोपयोगी उत्पादक कार्य शब्दावली अपने आप में अधिक अभिव्यक्तिपरक एवं व्यावहारिक पक्ष पर अधिक जोर डालती है |

3.1.1 ईश्वरभाई पटेल समिति द्वारा समाजोपयोगी उत्पादक कार्य की अवधारणा [Concept of SUPW by Committee]

समाजोपयोगी उत्पादक कार्य एक प्रकार से उद्देश्यपूर्ण, अर्थपूर्ण, हस्त प्रधान कार्य है जो वस्तुओं एवं सेवाओं के रूप में समुदाय के लिए उपयोगी हो | उद्देश्यपरक उत्पादक कार्य एवं सेवाएं विद्यार्थियों एवं समुदाय की आवश्यकताओं से संबंधित है तथा अधिगमकर्ता के लिए अर्थपूर्ण साबित होंगी | इस प्रकार के कार्य यांत्रिक नहीं बल्कि प्रत्येक स्तर पर इसमें योजना, विश्लेषण, गहन तैयारी सम्मिलित होगी | इस प्रकार यह शैक्षिक गुणों से युक्त है |

समिति ने आगे जोर देकर कहा -

"Adaptation of improved tools and materials where available and adaptation of modern techniques will lead to an appreciation of the need of a progressive society based on technology" ***(Pivotal, p.148)***

3.1.2 समाजोपयोगी उत्पादक कार्य के उद्देश्य

[Objectives of SUPW]

ईश्वरभाई पटेल समिति ने समाजोपयोगी उत्पादक कार्य के निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्य प्रस्तावित किए ***(Kochar,p.149)*** -

1) विद्यार्थियों को हस्तशिल्प कार्यों के अभ्यास एवं सम्पादन के लिए तैयार करना, उन्हें कार्य के संसार तथा समुदाय के प्रति सेवा से परिचित कराना, एवं हस्तप्रधान कार्यों के प्रति सम्मान की भावना का विकास करना |
2) समाज का उपयोगी सदस्य होने की इच्छा जागृत करना, सामाजिक इच्छित मूल्य तथा आत्मविश्वास, कार्य के प्रति समर्पण, सम्मान, सहिष्णुता, सहयोग, सद्भावना का विकास करना |
3) कार्य के विभिन्न रूपों में सम्मिलित सिद्धांतों को समझने में सहायता करना |
4) समूह कार्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास करना |
5) अधिगम करते हुए जीविकोपार्जन करने योग्य बनाना |

3.1.3 ईश्वरभाई पटेल समिति की संस्तुतियाँ

[Recommendations of Ishwarbhai Patel Committee]

समिति ने निम्नलिखित प्रस्ताव प्रस्तुत किये -

1. 6 से 14 वर्ष की आयु तक निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा, प्रथम पाँच वर्ष निम्न प्राथमिक स्तर, शेष तीन वर्ष की उच्च प्राथमिक स्तर के लिए |
2. मातृभाषा में अनुदेशन |
3. सभी शिक्षण विषय अधिक से अधिक समाजोपयोगी उत्पादक कार्य के क्रियाकलापों से संबंधित हो |
4. वस्तुओं से प्राप्त आय विद्यालय के लिए किसी न किसी प्रकार से उपयोगी हों परंतु इसके लिए उस आय पर अधिक दबाव ना डाला जाए |
5. बच्चों का आंतरिक मूल्यांकन हो यह मूल्यांकन उनके द्वारा दिन प्रतिदिन किए गए कार्य के आधार पर हो इसमें किसी अन्य वाह्य परीक्षा की आवश्यकता नहीं |
6. किताबों को अधिक महत्व ना देना, पाठ्यक्रम में स्वच्छता,स्वास्थ्य, नागरिकता, खेल एवं पुनर्निर्माण को सम्मिलित करना |

3.2 समाजोपयोगी उत्पादक कार्य के आधार

[Bases of SUPW]

समिति द्वारा उल्लिखित समाजोपयोगी उत्पादक कार्य के प्रमुख आधार इस प्रकार है **(Ruhela, p.22)** –

3.2.1 दार्शनिक आधार

[Philosophical Base]

ईश्वरभाई पटेल समिति विचार व्यक्त किया कि समाजोपयोगी उत्पादक कार्य का विकास बेसिक शिक्षा के मूल में विद्यमान गांधीवादी दर्शन के परिपेक्ष्य में होना चाहिए | विकेंद्रीकरण पर आधारित उनकी विचारधारा सर्वोदय समाज के विकास से संबंधित थी | हमारा संविधान देश को एक प्रजातांत्रिक, सामाजिक, पंथनिरपेक्ष, काल्पनिक मूल्यों पर आधारित बनाने का प्रयास करता है | इसके लिए यह आवश्यक है कि बच्चों को समाजोपयोगी उत्पादक कार्यों में संलग्न रखा जाए ताकि उन में उचित प्रजातांत्रिक दर्शन का विकास हो सके |

3.2.2 सामाजिक आधार

[Sociological Base]

समाजोपयोगी उत्पादक कार्य से संबंधित क्रियाकलाप हमारे बच्चों को सामाजिक इच्छाओं, मूल्यों, प्रवृत्तियों तथा प्रजातांत्रिक पंथनिरपेक्ष नागरिक बनाने के प्रयास के प्रति समर्पित है | **ईश्वर भाई पटेल समिति के अनुसार** – **"पाठ्यक्रम में सामाजिक सेवा के घटक समाजोपयोगी उत्पादक कार्य से सहबद्ध होंगे | उदाहरण के लिए जब बच्चे सामाजिक सेवा के रूप में पर्यावरणजन्य स्वच्छता के कार्यक्रम में सहभागिता लेते हैं, तो वह एक साथ सम्मिश्र खाद के लिए गड्ढे तैयार कर सकते हैं |" (Ruhela, p.23)**

3.2.3 आर्थिक आधार

[Economic Base]

समाजोपयोगी उत्पादक कार्यों में भागीदारी तथा उपलब्ध संसाधनों का पूर्ण उपयोग करने पर विद्यार्थी आत्मनिर्भर, मितव्ययी, आर्थिक रुप से उत्पादक तथा स्वयं के लिए, परिवार के लिए एवं समुदाय के लिए उपयोगी हो जाता है | हस्तप्रधान कार्यों से निर्मित विभिन्न प्रकार की वस्तुओं के विक्रय से विद्यार्थी धनराशि अर्जित कर सकते हैं तथा यदि आवश्यक हो तो आवश्यकता एवं रुचि अनुसार इसे व्यवसाय के रूप में अपना सकते हैं | समाजोपयोगी उत्पादक कार्य से के संबंधित क्रियाकलापों से यह आशा की जाती है कि यह क्रिया कलाप ग्रामीण समंको के पुनरुद्धार में सहायक सिद्ध होंगे |

3.2.4. शारीरिक आधार

[Physical Base]

शरीर के स्वस्थ विकास के लिए शारीरिक अभ्यास आवश्यक है | विद्यार्थियों को हस्तप्रधान वस्तुओं के निर्माण में शामिल करना कराना तथा स्वभाविक एवं अप्रत्यक्ष रूप से सामाजिक सेवा के प्रति प्रेरित कराना, यह दोनों ही दृष्टिकोण शारीरिक अभ्यास एवं समझ को प्रशिक्षित करने की दृष्टि से महत्वपूर्ण है | विद्यालय में समाजोपयोगी उत्पादक कार्य के अंतर्गत किए गए कार्य उनकी मांसपेशियों के साथ साथ शारीरिक कार्यप्रणाली मजबूती प्रदान करते हैं |

3.2.5. मनोवैज्ञानिक आधार

[Psychological Base]

विद्यार्थियों का विभिन्न प्रकार के क्रियाकलापों में अधिक रुचि होती है | जब एक विद्यार्थी अकेला होता है, तब वह वार्तालाप, निर्माण, कलात्मक अभिव्यक्ति, विभिन्न प्रकार की कलात्मक वस्तुओं के एकत्रीकरण के खेल में अपनी रुचि प्रदर्शित करता है | उस समय वह वातावरण के साथ तदात्म स्थापित करने के लिए उत्सुक रहता है जिसमें उसे स्वयं करके सीखना अत्यंत प्रिय है | विभिन्न सामूहिक क्रिया-कलाप विद्यार्थियों का सामाजीकरण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं | विद्यार्थियों की सहज प्रकृति के उदात्तीकरण हेतु एक प्रबल एवं उपयोगी माध्यम प्रदान करते है

अध्याय – चतुर्थ

शोध प्रक्रिया

[Research Methodology]

अध्याय – चतुर्थ : शोध प्रक्रिया

4.0 शोध विधि

[Research method]

प्रत्येक कार्य को पूर्ण करने के लिए किन्हीं मान्य सिद्धांतों का अनुसरण करना अनिवार्य है, यही मान्य सिद्धांत अध्ययन को प्रमाणिकता प्रदान करते है | प्रत्येक अध्ययन एक विशेष प्रकार की समस्या का वैज्ञानिक समाधान प्रस्तुत करता है | अतः विभिन्न प्रकार की समस्याओं की प्रकृति के ऊपर निर्भर है कि अध्ययन कैसा होगा अथवा उसकी विधि क्या होगी? समुचित वैज्ञानिक निष्कर्ष के लिए तो सबसे अच्छा होगा कि अध्ययनकर्ता किसी समस्या से ऐतिहासिक पक्ष का विश्लेषण करें, वर्तमान का अध्ययन कर, आवश्यकतानुसार प्रयोग भी करें | इस प्रकार समन्वित प्रणाली ही सर्वोत्तम प्रणाली है |

अधिकांश लेखकों ने प्रयोगात्मक और अप्रयोगात्मक शोध के लिए विभिन्न अध्ययन विधियों का विवरण प्रस्तुत किया है , जो इस प्रकार है –

1. मूलभूत एवं व्यावहारिक शोध (Fundamental or Basic Research)
2. व्यवहृत शोध (Applied Research)
3. प्रविधि शोध (Technique Research)
4. ऐतिहासिक शोध (Historical Research)
5. प्रयोगात्मक शोध (Experimental Research)
6. सर्वेक्षण शोध (Survey Research)
    - a) वर्णानात्मक सर्वेक्षण (Descriptive Survey)
    - b) विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण (Analytical Survey)
    - c) विद्यालय सर्वेक्षण (School Survey)
    - d) सामाजिक सर्वेक्षण (Social Survey)

प्रत्येक अध्ययन विधि का अपना एक सीमित क्षेत्र है | चयनित अध्ययन विधि उसी क्षेत्र में प्रमाणित परिणाम दे सकती है जिस क्षेत्र तथा कार्य के लिए उसे अविष्कृत किया गया है |

प्रस्तुत लघु शोध की पूर्ति हेतु **'ऐतिहासिक' 'वर्णनात्मक' एवं प्रयोगात्मक (Historical, Descriptive and Experimental Method)** शोध विधि का प्रयोग किया गया है |

1. **ऐतिहासिक शोध** – इसका सम्बन्ध भूत से है तथा भविष्य को समझने के लिए भूत का विश्लेषण करता है | अतः किसी समस्या, घटना अथवा व्यवहार से समुचित मूल्यांकन के लिए उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से परिचित होना आवश्यक है |

करलिंगर के अनुसार - ***"ऐतिहासिक अनुसन्धान अतीत की घटनाओं, विकासों तथा अवुभवों की समालोचनात्मक जाँच है ....अन्य शोधकर्ताओं के समान ही ऐतिहासिक शोधकर्ता भी प्रदत्त संकलित करता है, प्रदत्तों की वैधता हेतु उनकी जाँच करता है तथा प्रदत्तों की विवेचना करता है |"*** *(शैक्षिक अनुसन्धान,पृ.-250)*

2. **वर्णात्मक शोध** – शिक्षा तथा मनोविज्ञान सम्बन्धी अनुसन्धान के क्षेत्र में वर्णात्मक किया जाता है |

जॉन डब्ल्यू बेस्ट के अनुसार – ***"वर्णात्मक अनुसन्धान 'क्या है' का वर्णन तथा विवेचन करता है | इसका उन परिस्थितियों तथा संबंधों से सम्बन्ध है जो वर्तमान में हैं, अभ्यास जो लागू हैं, वे दृष्टिकोण या अभिवृत्तियाँ जिनको वर्तमान में माना जा रहा है, प्रक्रियाएँ जो चल रही हैं, प्रभाव जिनकी अनुभूति हो रही है तथा वे परम्पराएँ या दशाएँ जो विकसित हो रहीं हैं |"*** *(शैक्षिक अनुसन्धान,पृ.-266)*

3. **प्रयोगात्मक शोध** – कोई भी अनुसन्धान कार्य जो किसी व्यवस्थित प्रयोग पर आधारित हो प्रयोगात्मक अनुसन्धान कहलाता है | *(शैक्षिक अनुसन्धान,पृ.293)*

"Any research work carried out as the basis of some well organized experiment is the Experimental research."

4.1 जनसंख्या एवं प्रतिदर्श

[Population and Sample]

4.1.1 जनसंख्या

जनसंख्या से तात्पर्य ऐसे व्यक्तियों या वस्तुओं से होता है, जिसे शोधकर्ता अपने शोध के सन्दर्भ में स्पष्ट रूप से परिभाषित करता है तथा उसकी पहचान करके रखता है | **करलिंगर** महोदय इसे परिभाषित करते हुए कहते है कि –***"जनसंख्या से तात्पर्य वस्तुओं, व्यक्तियों, घटनाओं के सुपरिभाषित समूह के सभी सदस्यों से होता है |"***

प्रस्तुत शोधकार्य की जनसंख्या **नगर क्षेत्र अतर्रा (जिला बाँदा)** के 'उच्च प्राथमिक' तथा 'माध्यमिक विद्यालयों' में अध्ययनरत छात्राएँ है |

4.1.2 प्रतिदर्श

किसी भी अध्ययनकर्ता के लिए यह सम्भव नहीं कि अल्प समय में जनसँख्या के सभी व्यक्तियों या वस्तुओं को अपने अध्ययन में शामिल कर सकें | अतः समय एवं साधनों की उपलब्धता के आधार पर अध्ययनकर्ता जनसंख्या में से एक अंश का चयन करता है | यही अंश प्रतिदर्श या न्यादर्श कहलाता है |

चैपलिन के अनुसार – ***"न्यादर्श वह चुना हुआ अंश है जो पूर्ण का प्रतिनिधित्व करता है |"(19-Webliography)***

4.1.2.1 प्रतिदर्शन विधि

[Sampling Method]

जिस प्रक्रिया से प्रतिदर्शन का चयन किया जाता है, वह प्रतिदर्शन विधि कहलाती है | प्रतिदर्शन प्रायः एक जटिल प्रक्रिया है | प्रतिदर्शन की प्रक्रिया सम्बन्धित समष्टि की जटिलता की मात्रा के साथ-साथ घटती बढ़ती रहती है | न्यादर्शन की मुख्यतः दो विधियाँ हैं –

4.1.2.1.1 प्रसम्भाव्यता प्रतिदर्शन (Probability Sampling)

जब जनसंख्या की प्रत्येक इकाई (Unit) से प्रतिदर्श के चुने जाने की सामान सम्भावना हो तो वह सम्भावित या सम्भावना या सम्भाव्य प्रतिदर्शन कहलाता है | *(शैक्षिक अनुसन्धान, पृ.131-133)*

यह प्रतिदर्शन पाँच प्रकार का होता है -

1. दैव प्रतिदर्शन (Random Smapling)
2. स्तरीकृत प्रतिदर्शन (Stratified Smapling
3. बहुस्तरीय प्रतिदर्शन (Multipurposive Smapling)
4. व्यवस्थित प्रतिदर्शन (Systematic Smapling)
5. गुच्छित प्रतिदर्शन (Cluster Smapling)

4.1.2.1.2. अप्रसम्भाव्यता प्रतिदर्शन (Non- probability Sampling)

सम्भावना प्रतिदर्शन के विपरीत यदि समग्र की किसी इकाई के प्रतिदर्शन में चुने जाने के अवसर सामान्य सम्भावना पर निर्भर न होकर अनुसन्धानकर्ता की इच्छा या सुविधा पर निर्भर हों तो यह अप्रसम्भाव्यता प्रतिदर्शन कहलाता है |

अप्रसम्भाव्यता प्रतिदर्शन के प्रमुख चार प्रकार है –

1. उदेश्यपूर्ण प्रतिदर्शन (Purposive Sampling)
2. आकस्मिक प्रतिदर्शन (Incidental Sampling)
3. अभ्यंश प्रतिदर्शन (Quota Sampling)
4. सुविधापूर्ण प्रतिदर्शन (Convenience Sampling)

4.1.2.2 प्रतिदर्श चयन

[Selection of the sample]

प्रस्तुत अध्ययन की पूर्ति हेतु **नगर क्षेत्र अतर्रा (जिला बाँदा)** के 'उच्च प्राथमिक' तथा 'माध्यमिक विद्यालयों' में से निम्नलिखित तीन विद्यालयों का चयन समयाभाव के कारण **अप्रसम्भाव्यता प्रतिचयन** के अन्तर्गत **सुविधानुसार विधि** के द्वारा किया गया |

- आदर्श बाल निकेतन जू. हाई स्कूल, अतर्रा
- ब्रह्म विज्ञान इण्टर कॉलेज, अतर्रा
- सरस्वती बालिका इण्टर कॉलेज, अतर्रा

उपर्युक्त विद्यालयों में से पुनः **उच्च प्राथमिक विद्यालय** के **कक्षा 7** तथा **माध्यमिक विद्यालय** के **कक्षा 9** की 20-20 बालिकाओं का चयन समयाभाव के कारण **अप्रसम्भाव्यता प्रतिचयन** के अन्तर्गत **सुविधानुसार विधि** के द्वारा किया गया |

4.2 शोध प्रारूप

[Research Design]

अध्ययन की सफल प्रतिपूर्ति हेतु एवं पाठ्यक्रम में नवीन क्रियाकलापों के लिए समाजोपयोगी उत्पादक कार्य से सम्बन्धितकुछ नवीन एवं कलात्मक वस्तुओं के निर्माण को सम्मिलित किया गया है | इन विभिन्न वस्तुओं का निर्माण एक क्रमबद्ध प्रक्रिया द्वारा किया गया | इसमें सर्वप्रथम निर्माणशील वस्तुओं के संग्रह में से एक वस्तु का चयन तत्पश्चात चयनित वस्तु का स्वयं प्रयोग करना, प्रयोग सफल होने पर चयनित विद्यालय में प्रयोग प्रदर्शन एवं अभ्यास कराना, विद्यार्थियों द्वारा सफल अभ्यास के पश्चात् पाठ्यक्रम में उस विशेष क्रियाकलाप के समावेशन हेतु सुझाव प्रस्तावित करना सम्मिलित है | इस प्रक्रिया को एक रेखाचित्र के माध्यम से समझा जा सकता है –

4.2 अध्ययन प्रारूप
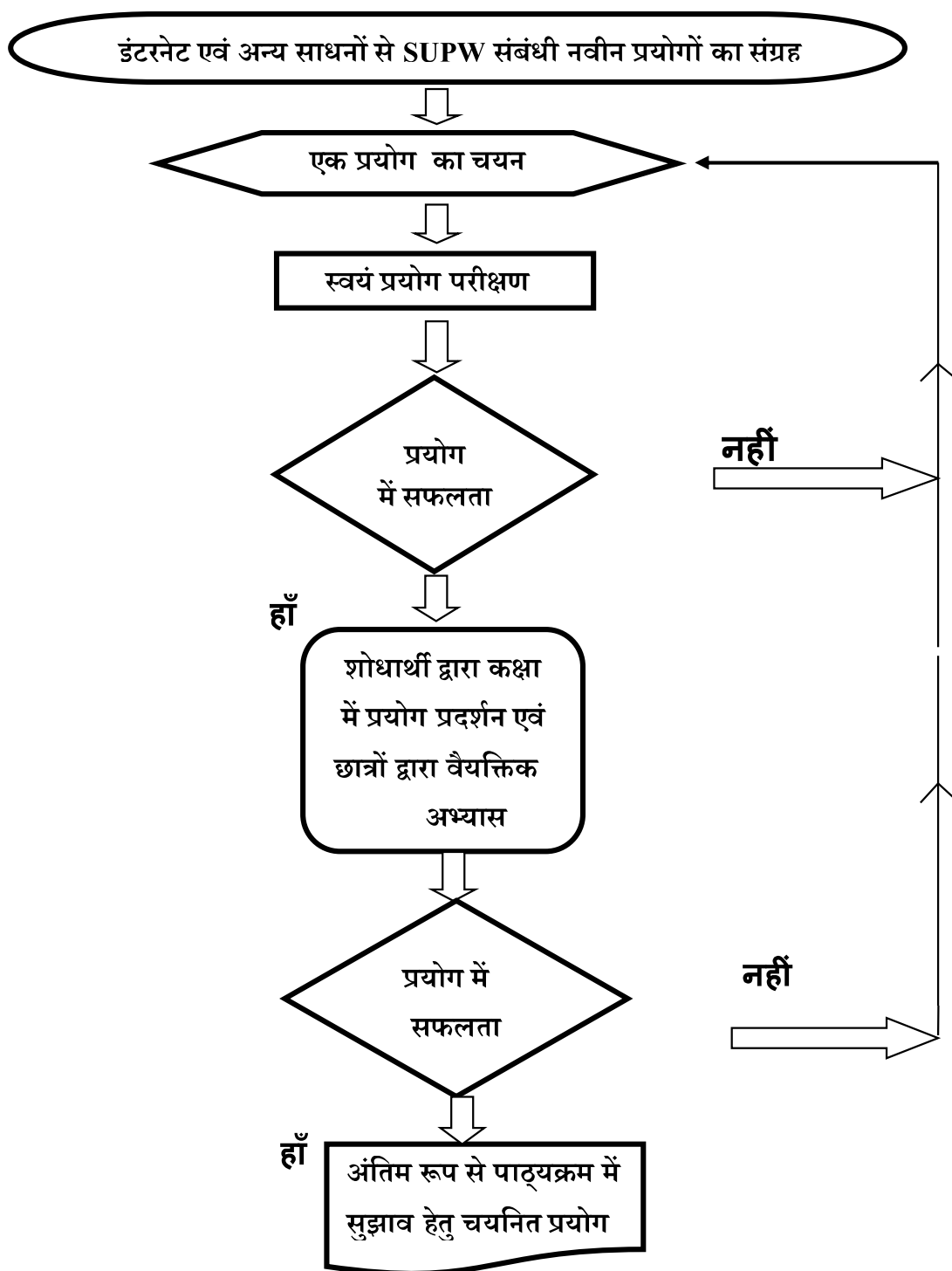
प्रस्तुत अध्ययन में प्रयोग का चयन, प्रशासन एवं पाठ्यक्रम में समावेशन हेतु उपर्युक्त प्रक्रिया का अनुसरण किया गया।

अध्याय – पंचम

समाजोपयोगी उत्पादक कार्य का वर्तमान परिदृश्य

[Present Scenario of SUPW]

अध्याय – पंचम : समाजोपयोगी उत्पादक कार्य का वर्तमान परिदृश्य

5.0 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 में शिक्षा का स्वरुप

[Nature of Education in National Curriculum 2005]

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005, अब तक का नवीनतम राष्ट्रीय दस्तावेज है | इसे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के शिक्षाविदों, वैज्ञानिकों, विषय विशेषज्ञों ने मिलकर तैयार किया है | मानव विकास संसाधन मंत्रालय की पहल पर **प्रो. यशपाल की अध्यक्षता** में देश के चुने हुए विद्वानों ने शिक्षा को नई राष्ट्रीय चुनौतियों के रूप में देखा तथा इन चुनौतियों से निपटने के लिए सिद्धान्तों तथा सुझावों को प्रस्तुत किया गया जिनमें से कुछ प्रमुख सिद्धान्त एवं सुझाव निम्नलिखित है (Webliography-23) -

5.0.1 मार्गदर्शी सिद्धांत

1) ज्ञान को स्कूल के बहरी जीवन से जोड़ा जाए |
2) पढ़ाई को रटंत प्रणाली से मुक्त किया जाए |
3) पाठ्यचर्या पाठ्यपुस्तक केन्द्रित न हो |
4) कक्षा-कक्ष को गतिविधियों से जोड़ा जाए |
5) राष्ट्रीय मूल्यों के प्रति आस्थावान विद्यार्थी तैयार हो |

5.0.2 प्रमुख सुझाव

1) शिक्षण सूत्रों जैसे ज्ञात से अज्ञात की ओर, मूर्त से अमूर्त की ओर आदि का अधिकतम प्रयोग हो |
2) कक्षा में शांति का नियम बार-बार ठीक नहीं अर्थात जीवन्त कक्षागत वातावरण को प्रोत्साहित करना चाहिए |
3) वे पाठ्यपुस्तकें महत्वपूर्ण है, जो अन्तः क्रिया का मौका दें |
4) कल्पना और मौलिक लेखन के अधिकाधिक अवसर प्रदान कराएँ जाएँ |
5) सांस्कृतिक कार्यक्रमों में मनोरंजन के स्थान पर सौन्दर्यबोध को प्रश्रय दें |

5.1 पाठ्यपुस्तकों में समाजोपयोगी उत्पादक कार्य का आलोचनात्मक अध्ययन [Critical Study of SUPW in Textbooks]

विद्यालयों में कार्यान्वित शिक्षण प्रक्रिया तथा विषयवस्तु की सार्थकता को समझने के लिए सरकारी उच्च प्राथमिक तथा गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों की **आलेखन-कला** तथा **नैतिक खेल एवं शारीरिक शिक्षा** की पाठ्यपुस्तकों का आलोचनात्मक पुनरावलोकन किया गया | जिससे निम्नलिखित तथ्य उजागर हुए –

1. सरकारी विद्यालयों की पाठ्यपुस्तकें गैर सरकारी विद्यालयों की अपेक्षा गुणवत्ता, आकर्षण एवं बनावट की दृष्टि से निम्न कोटि की हैं |
2. आलेखन-कला तथा नैतिक खेल एवं शारीरिक शिक्षा की पाठ्यपुस्तकों में शब्द ज्ञान अधिक है, क्रियात्मक ज्ञान कम |
3. क्रियात्मक ज्ञान की विषयवस्तु विशेषीकृत नहीं है, इसमें अति सामान्य क्रियाकलापों को स्थान दिया गया है |
4. पाठ्यपुस्तकों में मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का अनुसरण किया गया है परन्तु उन सिद्धांतों को विद्यालयी पाठ्यचर्या का अनिवार्य अंग नहीं बनाया गया है |
5. विद्यालयों में केवल ज्ञानात्मक पक्ष पर अधिक बल दिया जाता है, जबकि सर्वांगीण विकास हेतु भावपक्ष एवं कौशलात्मक निपुणता भी आवश्यक है |
6. अधिकांशतः गैर सरकारी एवं सरकारी विद्यालयों में ज्ञानपक्ष की अपेक्षा कलापक्ष के प्रति उपेक्षित दृष्टिकोण है |
7. शिक्षकों एवं अभिवावकों में अन्य कौशलात्मक तथा मनोरंजनात्मक उत्पादक कार्यों के प्रति उदासीनता है |
8. अधिकांश विद्यालयों में अति सामान्य क्रियाकलापों का भी आयोजन नहीं किया जाता है |

अतः आवश्यकता है विद्यमान पाठ्यक्रम को अक्षरशः लागू करने की तथा नवीन विषयवस्तु के समावेशन की जिससे विद्यार्थियों में मानसिक श्रम के साथ-साथ शारीरिक श्रम के महत्त्व को समझे |

5.2 समाजोपयोगी उत्पादक कार्य के विविध आयाम

[Different Aspect of Socially Useful Productive Work]

समाजोपयोगी उत्पादककार्य की अवधारणा अत्यन्त विस्तृत है | अपने कार्यों के माध्यम से समाज को किसी भी प्रकार की कल्याणकारी सेवाएं प्रदान करना उत्पादककार्य है | वर्तमान में समाजोपयोगी उत्पादक कार्यों का उद्देश्य विद्यार्थियों को कक्षा-कक्ष के अन्दर एवं बाहर चलने वाली समाजिक एवं आर्थिक क्रियाकलापों में सहभागिता के अवसर प्रदान करना है | **ईश्वरभाई पटेल समिति** के अनुसार –

"It must not be confined to the fourwalls of the school, nor can they be provided by the teacher only." ***(Pivotal, p.149)***

व्यक्तिगत विभिन्नता के अनुसार अवसर उपलब्ध करने हेतु आवश्यकता है कि समाजोपयोगी उत्पदाककार्य के विभिन्न आयामों पर दृष्टिपात किया जाए ,जो अग्रलिखित हैं –

1. विद्यालय की कृषि भूमि पर आधारित ऋतु अनुसार फूल- पत्तियाँ लगाना एवं सब्जियाँ बोना |
2. विद्यालय में घास का लान तैयार करना |
3. गमलों में दीर्घजीवी शोभायुक्त पौधें लगाना |
4. विद्यालय की चहारदीवारी पर लताएँ लगाना |
5. वृक्षारोपण |
6. कताई-बुनाई |
7. काष्ठ शिल्प |
8. ग्रन्थ शिल्प |
9. चर्म शिल्प |
10. धातु शिल्प |
11. धुलाई, रफू, बखिया |
12. रंगाई और छपाई |
13. सिलाई |
14. मूर्ति कला |

15. मत्स्य पालन |

16. मधुमक्खी पालन |

17. मुर्गी पालन |

18. साग-सब्जी का उत्पादन |

19. फल संरक्षण |

20. रेशम तथा टसर का काम |

21. सुतली तथा टाट-पट्टी का निर्माण |

22. हाथ से कागज बनाना |

23. फोटोग्राफी |

24. रेडियो मरम्मत |

25. घड़ी मरम्मत |

26. चाक, मोमबत्ती बनाना |

27. कालीन एवं दरी का निर्माण |

28. फूलों, फलों तथा सब्जियों के पौधे तैयार करना |

29. लकड़ी, मिट्टी आदि के खिलौने का निर्माण |

30. बेकरी और कन्फेक्शनरी का काम |

31. उपर्युक्त की सुविधा न होने पर कोई स्थानीय प्रचलित कार्य |

उपर्युक्त सभी समाजोपयोगी उत्पादक कार्य नवीन सृजन के साथ-साथ पुनः चक्रण, पुनः निर्माण, तथा पुनः उपयोग से सम्बन्धित हैं |

5.3 समाजोपयोगी उत्पादक कार्य का क्षेत्र

[Scope of SUPW]

ईश्वरभाई पटेल समिति ने समाजोपयोगी उत्पादककार्य की नवीन रूपरेखा प्रस्तुत की | विभिन्न क्रियाकलापों का चयन किस प्रकार किया जाए तथा किन क्षेत्रों में कार्यों को सम्पन्न किया जाए,

इन सभी पर प्रकाश डाला | समिति के अनुसार क्रियाकलापों के चयन से पूर्व निम्न बातों का ध्यान रखना आवश्यक है –

1. उन क्रियाकल्पों का चयन किया जाना चाहिए जो उत्पादक, शैक्षिक तथा सामाजिक उपयोग की हो |
2. चयनित क्रियाकलाप विद्यालय की चहारदीवारी में सीमित न रहें |
3. क्रियालालापों में स्थनीय समुदाय, सामुदायिक विकास, संगठन तथा सरकारी अभिकरण भी शामिल हो |

समाजोपयोगी शिक्षण प्रक्रिया में तीन बातों का समावेशन आवश्यक है –

1. अवलोकन एवं अन्वेषण से कार्य का सम्पूर्ण अध्ययन |
2. विभिन्न सामग्री उपकरण तकनीकों के साथ-साथ प्रयोग |
3. कार्याभ्यास |

उत्पादककार्य वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन से सम्बन्धित है, जिनमें निम्नलिखित छः क्षेत्र सम्मिलित है –

1. स्वास्थ्य एवं स्वच्छता |
2. भोजन |
3. आश्रय देना |
4. पुनर्निर्माण |
5. सामुदायिक कार्य |
6. सामाजिक सेवा |

5.4 अध्ययन में चयनित समाजोपयोगी उत्पादक कार्य

[Selected Work of SUPW in the Study]

समाजोपयोगी उत्पादक कार्य के विविध आयामों में से किसी भी क्रियाकलाप का चयन समाजोपयोगी उत्पादक कार्य के अन्तर्गत किया जा सकता है | प्रस्तुत अध्ययन में इसके अन्तर्गत कागज एवं कार्ड बोर्ड (गत्ते) से विभिन्न वस्तुओं का निर्माण किया गया, जो इस प्रकार हैं –

- **I.** फोटो फ्रेम प्रकार– एक
- **II.** फोटो फ्रेम प्रकार- दो
- **III.** पेपर बॉक्स (छोटा) प्रकार- एक
- **IV.** पेपर बॉक्स (बड़ा) प्रकार- दो
- **V.** न्यूज़ पेपर फ्लावर वास प्रकार- एक
- **VI.** न्यूज़ पेपर फ्लावर वास प्रकार- दो
- **VII.** न्यूज़ पेपरसाइकिल पेन स्टैंड प्रकार- एक
- **VIII.** न्यूज़ पेपर पेन स्टैंड प्रकार- दो
- **IX.** न्यूज़ पेपर पेन स्टैंड प्रकार- तीन
- **X.** न्यूज़ पेपर बास्केट (छोटी) प्रकार- एक
- **XI.** न्यूज़ पपेर बास्केट (बड़ी) प्रकार- दो
- **XII.** पेपर फ्लावर बास्केट
- **XIII.** फ्रूट बास्केट
- **XIV.** वाल हैंगिंग प्रकार- एक
- **XV.** वाल हैंगिंग प्रकार- दो
- **XVI.** न्यूज़ पेपर फ्लावर वास और फोटो फ्रेम
- **XVII.** न्यूज़ पेपर कछुआ बॉक्स
- **XVIII.** न्यूज़ पेपर हैण्ड बैग

समाजोपयोगी उत्पादक कार्य के अन्तर्गत निर्मित ये विभिन्न वस्तुएँ मनोरंजनात्मक, कलात्मक, उत्पादक, एवं समाज के लिए उपयोगी हैं तथा अपशिष्ट के निस्तारण एवं उनमें पुनः उपयोगिता सृजन से सम्बन्धित हैं |

अध्याय – षष्ठ

समाजोपयोगी स्वनिर्मित वस्तुएँ

[Socially Useful Selfmade Things]

6.0 आधारभूत तैयारी

प्रस्तुत अध्ययन में अधिकांश वस्तुओं का निर्माण पेपर से बनी पेपर स्टिक के माध्यम से किया गया है | यें स्टिक वस्तु के अनुसार मोटी, पतली, छोटी, बड़ी, बनाई जाती हैं | अतः आधारभूत तैयारी के रूप में पेपर काटना, पेपर को सही तरीके से पकड़ना, स्टिक की सहायता से पेपर स्टिक बनाना, स्टिक से स्टिक जोड़ना आवश्यक है | विद्यार्थियों में कार्य के प्रति समर्पण एवं अनुकूल मानसिक स्थिति का होना भी आवश्यक है |
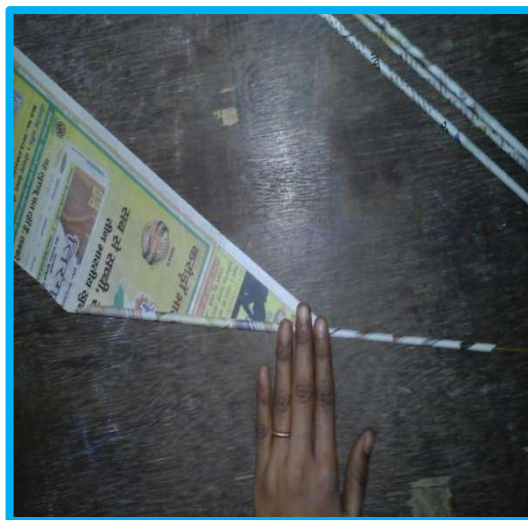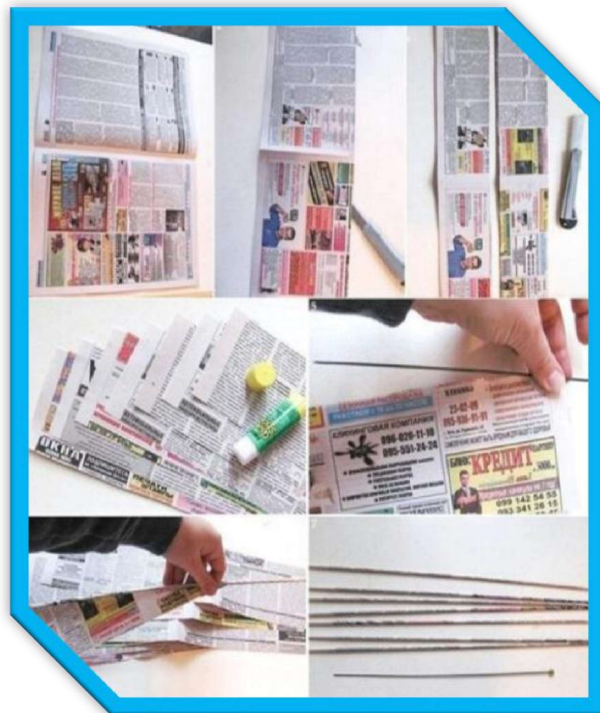
(पेपर को सही दिशा में रखना एवं पेपर स्टिक बनाना)

कुछ समाजोपयोगी वस्तुएँ इस प्रकार हैं -

6.0.1 न्यूज़ पेपर बॉक्स (छोटा) प्रकार – एक

आवश्यक सामग्री – न्यूज़ पेपर स्टिक, चार्ट पेपर/मोटा कागज,फेवीकोल, कैंची,रंग, |

स्रोत – इन्टरनेट **(Webliography-1)**

प्रथम चरण – छोटा बॉक्स बनाने के लिए पेपर स्टिक से दो वृत्ताकार घेरों का निर्माण करते हैं | जो आधार और ढक्कन के लिए आवश्यक है | ढक्कन वाला घेरा आधार से कुछ बड़ा होगा | अब दोनों घेरों के चारो तरफ मोटा कागज या दफ्ती चिपका देते हैं, जिसमे आधार की दफ्ती की चौड़ाई ढक्कन की दफ्ती से अधिक होगी (जैसे पांच अंगुल और दो अंगुल) |

द्वितीय चरण - अब आधार और ढक्कन दोनों के बहरी तरफ स्टिक एक दूसरे से सटाकर चिपका देते हैं | बॉक्स बनने के बाद फेवीकोल से पेंट कर देते हैं, सूखने के पश्चात् इच्छानुसार रंगों का उपयोग कर आकर्षक बना देते हैं | छोटा बॉक्स तैयार है |

ट्राई आउट – सरस्वती बालिका इण्टर कॉलेज, अतर्रा

परिणाम - सफल

6.0.2 न्यूज़ पेपर फोटो फ्रेम प्रकार – एक

आवश्यक सामग्री – कार्ड बोर्ड, पेपर स्टिक, पेपर कटर, फेवीकोल, कैंची, रंग,पारदर्शी शीट |

स्त्रोत – इन्टरनेट (**Webliography-2**)

प्रथम चरण - फोटो फ्रेम बनाने के लिए 6 इंच चौड़ाई, तथा 7 इंच लम्बाई के आयताकार कार्ड बोर्ड को दो इंच चारों तरफ से छोड़ कर एक चाकोर फ्रेम निकाल लेते हैं तथा बीच के भाग को अलग कर लेते हैं | अब फ्रेम बनाने के लिए पतली पेपर स्टिक को लम्बाई के दोनों सिरों पर एक दूसरे से सटाकर चिपकाते हैं | इसी प्रकार से चौड़ाई की तरफ से स्टिक चिपका कर, चारों तरफ पेपर स्टिक चिपकाते हैं |

द्वितीय चरण - पटरी की सहायता से लम्बाई के दोनों सिरों पर तिरछा (/) निशान लगाते हैं और कैंची की सहायता से बाहर निकली पेपर स्टिक को एक आकार देते हैं | फ्रेम स्टैंड बनाने के लिए कार्ड बोर्ड की पतली पट्टी को अलग किये हुए कार्ड बोर्ड के बीचों बीच चिपकाते है | इच्छा अनुसार रंगों का प्रयोग कर आकर्षक बना देते हैं | कांच के स्थान पर पारदर्शी शीट चिपका देते हैं | फोटो फ्रेम तैयार है |

ट्राई आउट – सरस्वती बालिका इण्टर कॉलेज,अतर्रा

परिणाम – सफल

6.0.3 न्यूज़ पेपर फोटो फ्रेम प्रकार – दो

आवश्यक सामग्री - कार्ड बोर्ड, पेपर स्टिक, पेपर कटर, फेवीकोल, कैंची, रंग, पारदर्शी शीट |

स्त्रोत – इन्टरनेट - **(Webliography-3)**

प्रथम चरण - फोटो फ्रेम बनाने के लिए 6 इंच चौड़ाई तथा 7 इंच लंबाई के आयताकार कार्ड बोर्ड को 2 इंच चारों तरफ से छोड़कर एक चौकोर फ्रेम निकाल लेते हैं तथा बीच के भाग को पूर्ववत् ही अलग कर लेते है | इसके पश्चात फ्रेम के ऊपरी सिरे पर चारों तरफ से बराबर से पेपर स्टिक को चिपका देते हैं |

द्वितीय चरण - इसके पश्चात स्टिक से छोटे-बड़े गोल घेरे बनाते हैं | इन छोटे बड़े घेरों को इच्छानुसार फ्रेम के ऊपर चिपका देते हैं | इसके पश्चात स्टैंड पूर्ववत् ही बनाते हैं |

सुविधानुसार रंगो का प्रयोग कर फ्रेम को आकर्षक बनाते हैं | इसके पश्चात पारदर्शी शीट लेकर फ्रेम के पिछले सिरे पर चिपका देते हैं | फोटो फ्रेम तैयार है |

ट्राई आउट – सरस्वती बालिका इण्टर कॉलेज, अतर्रा

परिणाम – सफल

6.0.4 न्यूज़ पेपर बॉक्स (बड़ा) प्रकार – दो

आवश्यक सामग्री – पेपर स्टिक, कार्ड बोर्ड (छोटा साँचा), फेवीकोल, कैंची, रंग |

स्रोत – इन्टरनेट **(Webliography-4)**

प्रथम चरण – बड़ा पेपर बॉक्स बनाने के लिए मुख्यतः सामान्य आकार के पेपर स्टिक से बने 16 गोल घेरे तथा वर्गाकार सांचे के सहारे से 16 वर्गाकार घेरे बनाते हैं | गोल घेरों को वर्गाकार घेरों के अन्दर रखकर फेवीकोल से चिपका देते हैं | इस प्रकार से 16 वर्गाकार घेरों से बॉक्स बनाते हैं |

द्वितीय चरण – सर्वप्रथम आधार बनाने के लिए चार घेरों को जोड़ देते हैं | फिर स्टिक लेकर उसके चारों तरफ एक बॉर्डर बनाते है इसी प्रकार ढक्कन को भी बनाते हैं | आधार की दीवारों को बनाने के लिए दो घेरों को जोड़ देते हैं तथा बॉर्डर बना देते हैं | इस प्रकार चारों तरफ बनाकर बॉक्स बना लेते हैं | फिर बॉक्स के चारों तरफ से एक स्टिक लगा देते हैं | अब ढक्कन के बीचों के बीच स्टिक से बना एक गोल घेरा बना देते हैं | इच्छानुसार रंग देते हैं | बड़ा बॉक्स तैयार है|

ट्राई आउट – सरस्वती बालिका इण्टर कॉलेज, अतर्रा

परिणाम – सफल

6.0.5 न्यूज़ पेपर फ्लावर वास प्रकार – एक

आवश्यक सामग्री – पपेर स्टिक, पतली दफ्ती/ शादी कार्ड, फेवीकोल,पटरी, कैंची |

स्त्रोत – इन्टरनेट **(Webliography-5)**

प्रक्रिया – फ्लावर वास बनाने के लिए शादी कार्ड (12 इंच लम्बाई 10 इंच चौड़ाई) पर फेवीकोल की सहायता से सटाकर स्टिक लगाते हैं | सूखने के बाद उसमे चौड़ाई की तरफ 10 इंच तथा दूसरी तरफ 8.30 इंच निशान लगाकर दोनों निशान को मिला देते हैं | फिर कैंची से तिरछा (/) काट देते हैं | इच्छानुसार रंग देते हैं | फ्लावर वास तैयार है |

ट्राई आउट – ब्रह्म विज्ञान इण्टर कॉलेज, अतर्रा

परिणाम – सफल

6.0.6 न्यूज़ पेपर पेन स्टैंड प्रकार – एक

आवश्यक सामग्री – न्यूज़ पेपर बॉल (30), कार्ड बोर्ड, प्रकार, फेवीकोल, रंग |

स्रोत – इन्टरनेट (Webliography-6)

प्रक्रिया – न्यूज़ पेपर के छोटे वर्गाकार टुकड़े कर लेते हैं | टुकड़ों पर फेवीकोल लगाकर उनकी छोटी-छोटी गोलियाँ बना लेते हैं | अब कार्ड बोर्ड पर प्रकार से छोटा वृत्त बनाते हैं | उसे पेपर से कवर करते हैं | अब वृत्त के ऊपर सामान्य दूरी पर गोलियाँ रखते हैं | इस प्रकार एक घेरा के ऊपर घेरे बनाते हुए एक सामान्य आकर देते हैं | इसके बाद भी फेविकोल से पेंट कर देते हैं | सूखने के बाद इच्छानुसार रंग कर देते हैं | पेन स्टैंड तैयार है |
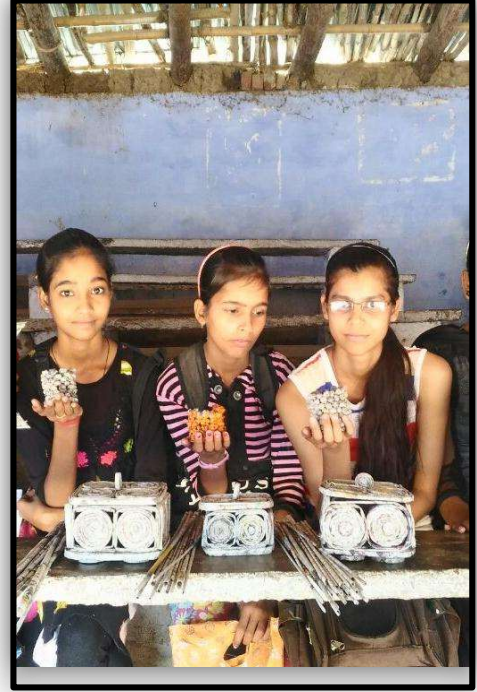
ट्राई आउट – सरस्वती बालिका इण्टर कॉलेज, अतर्रा

परिणाम – सफल

6.0.7 न्यूज़ पेपर बास्केट प्रकार – एक

आवश्यक सामग्री – पेपर स्टिक, नेल पॉलिश का ढक्कन , फेवीकोल, रंग |

स्रोत – इन्टरनेट (Webliography-7)

प्रथम चरण – न्यूज़ पेपर बास्केट बनाने के लिए सबसे पहले नेल पॉलिश के ढक्कन पर पेपर स्टिक से गोल छल्ले बना लेते हैं तथा छल्लों की

संख्या के बराबर ही छोटे घेरे बनाते हैं जो छल्लों के बीच में आसानी से आ जाए | इस प्रकार से 20-25 घेरे बनाते हैं |

द्वितीय चरण – बास्केट बनाने के लिए सबसे पहले आधार बनाते हैं जिसके लिए स्टिक से गोल घेरा बनाते हैं | अब इस आधार के ऊपर छल्ले में लगे हुए छोटे घेरे चिपकाते हैं तथा उसके ऊपर फिर एक घेरा पूर्ण करते हैं | ढक्कन बनाने के लिए स्टिक से बास्केट के ऊपरी भाग के बराबर गोल घेरा बनाते हैं | इसके पश्चात् घेरे को अन्दर की तरफ से बाहर की ओर निकालते हुए थोड़ा उभरा हुआ आकार देते हैं | ढक्कन के ऊपर एक छोटा घेरा पकड़ने के लिए रख देते हैं | इच्छानुसार रंग देते हैं |

ट्राई आउट – सरस्वती बालिका इण्टर कॉलेज, अतर्रा

परिणाम – सफल

6.0.8 न्यूज़ पेपर फ्लावर वास प्रकार – दो

आवश्यक सामग्री – न्यूज़ पेपर स्टिक, कार्डबोर्ड, फेवीकोल, रंग |

स्त्रोत – इन्टरनेट (Webliography-8)

प्रथम चरण – न्यूज़ पेपर फ्लावर वास को बनाने के लिए 2 इंच

आयताकार कार्ड बोर्ड के दो टुकड़े लेते हैं | एक टुकड़े के तीन तरफ एक पेपर स्टिक रखते हैं तथा चौथी तरफ दो स्टिक रखते हैं | इसके बाद दोनों कार्डबोर्ड को आपस में जोड़ देते हैं | फ्लावर वास बनाने के लिए अतिरिक्त जोड़ी गई स्टिक को कार्ड बोर्ड के दूसरे सिरे की स्टिक के नीचे से निकाल कर अगले सिरे तक पहुचाते हैं | जब फ्लावर वास के घेरे को बड़ा करना होता है तो स्टिक को बाहर की तरफ रखते हैं और जब उसको अंतिम आकार देना होता है तो स्टिक को अन्दर की तरफ रखते हैं | एक स्टिक के समाप्त होने से पहले दूसरी स्टिक जोड़ लेते हैं |

द्वितीय चरण – एक आकार देते हुए इसके घेरेको ऊपर की तरफ पतला कर सामान्य ऊँचाई रखते हैं | अंतिम चरण में स्टिक को फेवीकोल से अन्दर की तरफ जोड़ देते हैं | इच्छानुसार रंग देते हैं, फ्लावर वास तैयार है |

ट्राई आउट – सरस्वती बालिका इण्टर कॉलेज, अतर्रा

परिणाम – सफल

6.0.9 न्यूज़ पेपर फ्रूट बास्केट प्रकार – दो

आवश्यक सामग्री – पेपर स्टिक, कार्ड बोर्ड, प्रकार, फेवीकोल, रंग |

स्त्रोत – इन्टरनेट **(Webliography-9)**

प्रथम चरण – न्यूज़ पेपर फ्रूट बास्केट बनाने के लिए सबसे पहले प्रकार से कार्ड बोर्ड पर 4 इंच का आधा वृत्त बनाते हैं और अर्ध वृत्त निकाल लेते हैं | इस पर प्रकार से सामान्य दूरी पर छेद करते हैं जिसमे स्टिक निकल जाए | इस प्रकार से लगभग 14 स्टिक कार्ड बोर्ड के अन्दर डालते हैं कार्ड बोर्ड के दोनों तरफ स्टिक बराबर रखते हैं | इसके पश्चात बास्केट बनाने के लिए एक तरफ की स्टिक के अंतिम स्टिक पर एक स्टिक चिपका देते हैं |

द्वितीय चरण – उस अतिरिक्त स्टिक से बास्केट बनाना प्रारम्भ करते हैं | उस स्टिक पर अन्य स्टिक को एक स्टिक ऊपर एक स्टिक नीचे रखते हैं | अंतिम स्टिक के नीचे से निकालकर दूसरे सिरे तक इसी प्रकार बुनते हैं | अंत में अन्य स्टिक से एक स्टिक को अच्छी तरह लपेट देते हैं | इच्छानुसार रंग देते हैं | फ्रूट बास्केट तैयार है |

ट्राई आउट – सरस्वती बलिका इण्टर कॉलेज, अतर्रा |

परिणाम – सफल

6.0.10 न्यूज़ पेपर वाल हैंगिंग प्रकार – एक

आवश्यक सामग्री – पेपर स्टिक, कार्ड बोर्ड, फेवीकोल, पेपर कटर, रंग |

स्त्रोत – इन्टरनेट **(Webliography-10)**

प्रथम चरण – वाल हैंगिंग बनाने के लिए सबसे पहले पेपर स्टिक से कुछ बड़े कुछ छोटे विभिन्न आकार के घेरे बनाते हैं जिसमे से तीन घेरे सामान्यतः बड़े होते हैं जो केंद्र में रखे जाते हैं अन्य घेरे बड़े से छोटे क्रम में रखे जाते हैं | अब इन

विभिन्न आकार के घेरों को कार्ड बोर्ड पर व्यवस्थित क्रम में रख कर चिपकाते हैं |

द्वितीय चरण – कार्ड बोर्ड पर चिपकाने के बाद उसे पेपर कटर से किनारे से काटते हैं | फेवीकोल से पेंट करते हैं | सूखने के बाद रंग देते हैं | वाल हैंगिंग तैयार हैं |

ट्राई आउट - सरस्वती बालिका इण्टर कॉलेज, अतर्रा

परिणाम - सफल

6.0.11 न्यूज़ पेपर फ्लावर वास एवं फोटो फ्रेम

आवश्यक सामग्री – पेपर स्टिक, कार्ड बोर्ड, फेवीकोल,पेपर कटर, कैंची, रंग |

स्त्रोत – इन्टरनेट **(Webliography-11)**

प्रथम चरण - फोटो फ्रेम और फ्लावर वास साथ में बनाने के लिए एक कार्ड बोर्ड या मोटी दफ्ती में पान का आकार बनाते हैं | फिर इस शेप को कटर की सहायता से काट लेते हैं | इसी प्रकार से दो शेप तैयार करते हैं | अगला शेप पिछले से कुछ छोटा होगा | इन दोनों आकारों में पेपर स्टिक को सटाकर चिपका देते हैं |

द्वितीय चरण - पिछले आकार के बीच में 4 'V' आकार में खड़ी स्टिक चिपका देते हैं | उसके ऊपर से दूसरा शेप रखकर चिपका देते हैं | उसके ऊपर चार स्टिक फ्रेम के आकार की बीच में लगा देते हैं | इच्छानुसार रंग कर आकर्षक बना देते हैं |

ट्राई आउट – सरस्वती बालिका इण्टर कॉलेज, अतर्रा

परिणाम – सफल

6.0.12. न्यूज़ पेपर वाल हैंगिंग प्रकार – दो

आवश्यक सामग्री – पेपर स्टिक, कार्ड बोर्ड,फेवीकोल, रंग |

स्त्रोत – इन्टरनेट **(Webliography-12)**

प्रथम चरण - वाल हैंगिंग बनाने के लिए 7 इंच वर्गाकार कार्ड बोर्ड के टुकड़े को लेते हैं एवं तीन टुकड़े 3 इंच कार्ड बोर्ड के लेते हैं | इन चारों छोटे-बड़े टुकड़ों के ऊपर पेपर स्टिक चिपका लेते हैं | अतिरिक्त पेपर स्टिक को कैंची से काट लेते हैं | फेवीकोल से पेंट कर लेते हैं तथा प्रत्येक टुकड़े पर बॉर्डर बना देते हैं | इच्छानुसार पेंट कर के आकर्षक बना लेते हैं |

ट्राई आउट – सरस्वती बालिका इण्टर कॉलेज, अतर्रा

परिणाम – सफल

6.0.13 न्यूज़ पेपर पेन स्टैंड प्रकार – दो

आवश्यक सामाग्री – पेपर स्टिक, कार्ड बोर्ड, मोटा कपड़े का टुकड़ा, कैंची, फेवीकोल, रंग |

स्त्रोत – इन्टरनेट **(Webliography-13)**

प्रथम चरण – न्यूज़ पेपर पेन स्टैंड बनाने के लिए पेपर स्टिक से 5 इंच के दो घेरे बनाते हैं | घेरों को अन्दर की तरफ से अँगूठे की सहायता से कटोरी का आकार देते हैं | अब 2 इंच चौड़ा और 9 इंच लम्बा मोटा कपड़ा लेते हैं | उसमे फिवीकोल की सहायता से स्टिक चिपकाते हैं | इसके पश्चात् स्टिक लगे कपड़े को सादे तरफ से फैलाकर उसके ऊपर दोनों घेरों को आमने-सामने रखकर कपड़े के ऊपर चिपकाते हैं | कपड़े की लम्बाई घेरे से ¾ होनी चाहिए |

द्वितीय चरण – स्टैंड बनाने के लिए कार्ड बोर्ड पर ‘A’ शेप का निशान लगाते है | परन्तु दोनों लाइन्स के बीच में कुछ सामान्य दूरी होनी चाहिए | उन दोनों लाइन्स को आधा वृत्त बनाकर मिला देते हैं | इस प्रकार से दो टुकड़े तैयार करते हैं | उन दोनों को जोड़ने के लिए अन्य कार्ड बोर्ड के टुकड़े का प्रयोग करते हैं | अब स्टैंड के ऊपर घेरे को रखकर चिपका देते हैं | इच्छनुसार रंग देते हैं |

ट्राई आउट – सरस्वती बालिका इण्टर कॉलेज, अतर्रा

परिणाम – सफल

6.0.14 न्यूज़ पेपर बैग

आवश्यक सामग्री – मैगजीन पेपर स्टिक, फेवीकोल, धागा, सुई |

स्त्रोत – इन्टरनेट **(Webliography-14)**

प्रथम चरण – पेपर बैग बनाने के लिए 15 मैगजीन स्टिक एक सामान्य दूरी में रखते हैं | दूरी में रखकर एक तरफ से टेप लगाकर उनको मजबूती से बांध देते हैं | उसके बाद एक तरफ से आखिरी स्टिक में एक स्टिक लगाकर, उन 16 स्टिक के बीच एक स्टिक ऊपर एक स्टिक नीचे कर उसे बुनना प्रारम्भ करते हैं | अंतिम स्टिक से मोड़कर दूसरी स्टिक पर ले जाते हैं | लगभग 15cm बुनने के बाद दोनों किनारे से दो स्टिक छोड़कर लगभग 4 अँगुल बुनते है जिससे उसका ऊपर का भाग तैयार हो जाए |

द्वितीय चरण – पेपर बैग को पूरा बुनने के बाद निकली हुई स्टिक को बुनी हुई स्टिक के अन्दर कर चिपका देते हैं | पूरा बुनने के बाद उसे मोड़कर सुई एवं धागे से दोनों किनारों को सिलते हैं | पेपर बैग तैयार है |

ट्राई आउट – सरस्वती बालिका इण्टर कॉलेज, अतर्रा

परिणाम – सफल

इस प्रकार विभिन्न वस्तुओं का निर्माण बालिकाओं द्वारा लगन एवं उत्साह से किया गया | प्रत्येक विद्यार्थी में अपनी विशिष्ट प्रतिभा होती है | यह प्रतिभा उनके द्वारा किये गए कार्यों में देखने को मिलती है | सिखाये गये कार्यों में उन्होंने सहर्ष निपुणता के साथ नवीनता का समावेश किया | कुछ विद्यार्थियों की प्रतिभा देखने एवं सराहने

योग्य है | जैसे ये बालिकाएँ

ऊपर से नीचे - गुलक्शा, माण्डवी, नेहा |

वर्तमान में आवश्यकता है कि विद्यालयी पाठ्यक्रम में इसी प्रकार के अन्य क्रियाकलापों के समायोजन किया जाए जिससे ज्ञान के साथ कौशल विकास भी हो |

अध्याय – सप्तम

पाठ्यक्रम में समावेशन हेतु सुझाव

[Suggestions for Inclusion in the Curriculum]

अध्याय – सप्तम : पाठ्यक्रम में समावेशन हेतु सुझाव

विद्यालय के पाठ्यक्रम में प्रचलित 'नैतिक खेल एवं शारीरिक शिक्षा' तथा 'आलेखन कला' की पाठ्यपुस्तकों में शारीरिक अभ्यास, चित्रकला एवं आलेखन का ज्ञान के साथ-साथ अत्यन्त सामान्य क्रियाकलापों का समावेश है, जिनके अनुपालन में न तो विद्यालय तत्पर है और न ही विद्यार्थी | अतः आवश्यकता है कि पाठ्यक्रम में कुछ नवीन रुचिपूर्ण एवं उपयोगी क्रिया-कलापों का समावेश किया जाए | उच्च प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रम में SUPW से सम्बन्धित कुछ नवीन क्रियाकलापों के समावेशन का सुझाव दिया गया है जो इस प्रकार है -

7.0 उच्च प्राथमिक स्तर (6-8) हेतु

1. कक्षा-कक्ष की मेज कुर्सी के साथ-साथ चारों तरफ स्वच्छता रखना |
2. विद्यालय परिसर में पेड़ों से गिरी हुई पत्तियों को खाद के गड्ढे में डालना |
3. मिट्टी से प्रतिमान निर्माण |
4. पेपर को विभिन्न प्रकार के ज्यामितीय आकार देना देने के लिए पेन, चाकू, पेंसिल, कटर एवं कैंची का उपयोग करना |
5. पेपर को मोड़ना एवं हस्तशिल्प कार्य |
6. किताब में जिल्द चढ़ाना |
7. वृक्षारोपण |

7.1 माध्यमिक स्तर (9-10) हेतु

1. स्थानीय समुदाय के विभिन्न सेवा केंद्र तथा बस स्टॉप, पोस्ट ऑफिस, रेलवे स्टेशन स्वास्थ्य केंद्र डेअरी फार्म आदि का भ्रमण तथा वहां संचालित कार्यप्रणाली से संबंधित सूचनाएं एकत्र करना |
2. स्थानीय क्षेत्र में उपलब्ध विभिन्न प्रकार की सामग्री की पहचान करना जिनका उपयोग प्रतिदिन प्रयोग की जाने वाली वस्तुओं के निर्माण में होता है |

3. पर्यावरणीय एवं प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए अल्पव्यय सामग्री की पहचान |

4. कार्य की विभिन्न परिस्थितियों/प्रक्रियाओं का निरीक्षण |

5. विभिन्न प्रकार के उपकरणों का प्रयोग यथा बागवानी, संबंधी शिक्षा संबंधी, स्वच्छता संबंधी तथा रचनात्मक क्रियाकलाप |

6. घर एवं विद्यालय की साज-सज्जा हेतु आकर्षक एवं उपयोगी वस्तुओं का निर्माण पेपर काटना, प्रतिमान, ग्रीटिंग कार्ड्स, खिलौने, मालाएं आदि |

7. राष्ट्रीय एवं स्थानीय त्योहारों के साथ साथ विद्यालय के अतिरिक्त क्रियाकलापों में भागीदारी |

7.2 उच्च माध्यमिक स्तर (11-12) हेतु

1) डिटर्जेंट पाउडर तैयार करना |

2) पेपर कवर एवं ग्रीटिंग कार्ड बनाना |

3) चेहरे की क्रीम वैसलीन एवं टूथ पाउडर बनाना |

4) मिट्टी के प्रतिमान, गुड़िया आदि बनाना |

5) चाक एवं फाउन्टेन पेन की स्याही बनाना |

6) किताबों पर जिल्द का निर्माण |

7) शरबत एवं जैम बनाना |

8) सिलाई एवं बुनाई |

9) अनुपयोगी वस्तुओं का पुनः चक्रण पुनः निर्माण तथा पुनः प्रयोग सीखना |

10) इलेक्ट्रॉनिक वस्तुओं को सुधार एवं मरम्मत |

11) मशरूम उत्पादन |

12) बायोगैस (गोबर गैस प्लांट) |

7.3 समाजोपयोगी उत्पादक कार्यों का विद्यालय में क्रियान्वयन

[Implimentation of SUPW in School]

वर्तमान में विद्यालय शिक्षा से ज्ञान के साथ-साथ कौशल विकास होना भी आवश्यक है | माध्यमिक स्तर के पश्चात कौशल विकास कार्यक्रम से पूर्व यह आवश्यक है कि इससे पूर्व ही क्रियाकलापों का आयोजन विद्यालय जीवन में कराया जाए | परन्तु यह बात विचारणीय है कि कोई भी मुख्य अध्यापक शिक्षा के एवं शैक्षिक प्रशासक समाजोपयोगी उत्पादक कार्यों की सूची का अंधानुकरण नहीं करेंगे | अतः यह वांछनीय है कि इस योजना के संबंध में शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं मॉनिटरों से विचार-विमर्श किया जाए | समुदाय में स्थित पंचायत, राजनैतिक एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं, सरकारी अफसरों, स्वायत्तशासी संगठनों से वार्तालाप किया जाए |

SUPW से संबंधित क्रियाकलापों का आयोजन करने से पूर्व शिक्षकों को तीन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है-

प्रथम - विद्यालय में उपलब्ध आर्थिक संसाधनों के अनुसार क्रियाकलापों का आयोजन करना |

द्वितीय - कार्यकारी स्टाफ के अतिरिक्त कोई अन्य शिक्षक की उपस्थिति अनिवार्य नहीं |

तृतीय – SUPW कार्यक्रम स्थानीय आवश्यक्ताओं पर आधारित होना चाहिए | ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विभिन्न विद्यालयों में पढ़ने वाले बालक बालिकाओं के लिए पृथक–पृथक क्रियाकलापों का आयोजन किया जाना चाहिए | वातावरण के अनुसार शिक्षकों को यह समझना आवश्यक है कि कौन से क्रिया कलाप अनिवार्य है? कौन से होने चाहिए एवं कौन से क्रियाकलाप हो सकते हैं?

7.3.1 समाजोपयोगी उत्पादक कार्य का पाठ्यक्रम में स्थान

[Place of SUPW in Curriculum]

शिक्षा बालक एवं बालिका को सम्पूर्ण जीवन के लिए तैयार करती है,लेकिन परम्परागत शिक्षा संस्थानों में दी जाने वाली शिक्षा सभ्य जीविकोपार्जन के लिए पूर्ण नहीं है | समान्य शिक्षा इस उद्देश्य के लिए अपूर्ण है | अतः +2 के स्तर से ही युवाओं को विविधतायुक्त पाठ्यक्रम की शिक्षा देने का सुझाव दिया जाता है | उच्चतर माध्यमिक शक्षा का विस्तार दो रूपों में है –

1. सामान्य शिक्षा
2. व्यावसायिक शिक्षा

अतः पाठ्यक्रम की रूपरेखा तथा सामान्य शिक्षा के शिक्षण हेतु समय विस्तार इस प्रकार होना चाहिए –

पाठ्यक्रम विस्तार

क्र.	पाठ्यक्रम विवरण	प्रतिशत %
1.	भाषा	15%
2.	समाजोपयोगी उत्पादक कार्य	15 %
3.	वैकल्पिक विषय	70%

National Review Committee के अनुसार सम्पूर्ण शिक्षण समय का 50% व्यावहारिक कार्यों (Practical Works) में व्यय किया जाना चाहिए | विशेष ध्यान स्व-नियोजन (Self-Employed) पर दिया जाना चाहिए |

ईश्वरभाई पटेल समिति के अनुसार – कक्षा 1 से 5 तक सम्पूर्ण विद्यालयी पाठ्यक्रम का लगभग 20%, कक्षा 5 से 8 तक एक सप्ताह में 6 घंटे तथा 8 से 10 तक एक सप्ताह में 6 घंटे समाजोपयोगी उत्पादक कार्य में व्यय किया जाना चाहिए |

आदिसेशैह समिति 1978, उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यालय कार्यकारी समय का लगभग 15% supw पर निवेश किया जाना चाहिए| सन 1983 में supw आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में कहा गया कि विद्यालयी अवधि का 20% supw सम्बन्धित क्रियाकलापों के लिए होना अनिवार्य है, तथा यह समय अन्य शैक्षिक विषयों में व्यय नहीं किया जाना चाहिए |

NCERT के प्रसिद्ध दस्तावेज, प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा हेतु supw पाठ्यक्रम (1986, p.16) कक्षा 1 से 5 तक विद्यालयों में 8 कालांश में से 45 मिनट का समय supw कार्यों को दिया जाना चाहिए | उच्च माध्यमिक स्तर में 6 कालांशों के अतिरिक्त समय निर्धारित कर supw क्रियाकलाप कार्यान्वित किया जाना चाहिए | खाली कालांशों के बेहतर उपयोग के लिए इनका आयोजन किया जा सकता है |

NCERT का दस्तावेज 'समाजोपयोगी उत्पादक कार्य – आदर्श पाठ्यक्रम ईकाई (1979, p.7) के अनुसार विद्यालय की सम्पूर्ण कार्य अवधि में कम से कम 15 मिनट सामुदायिक कार्यों पर व्यय किया जाना चाहिए | एक दो खाली कालांशों को एक कर इनका कार्यान्वयन किय जा सकता है |

7.3.2 समाजोपयोगी उत्पादक कार्य के चयन एवं आयोजन से पूर्व ध्यान देने योग्य बातें [Some Important Points before Selection and Planning of SUPW Activities]

संबंधित क्रियाकलाप शैक्षिक हो तथा क्रियाकलाप -

1) विद्यार्थियों के विकास के स्तर के अनुसार होना चाहिए |

2) विकासात्मक आवश्यकता का सम्पूर्ण ध्यान रखने वाली होनी चाहिए |

3) आत्मानुभूति की प्रक्रिया में मदद करने वाली होनी चाहिए |

4) समस्या समाधान कौशल एवं सृजनात्मकता से सम्मिलित नियोजित उपक्रम तथा मूल्य निर्माण में सहायक होनी चाहिए |

5) विद्यार्थियों को प्रासंगिक ज्ञान एवं कौशल देने में सहायता करने वाली होनी चाहिए

6) संबंधित क्रियाकलाप उत्पादक होना चाहिए तथा उसका परिणाम विद्यार्थियों, समुदाय तथा विद्यालय समुदाय के लिए प्रत्यक्ष रुप से उपभोगीय हो तथा विक्रय योग्य हो |

7) सेवाओं में सामाजिक तथा आर्थिक मूल्यों का समावेशन हो क्रियाकलाप समुदाय कथा व्यक्तिगत आवश्यकता का परस्पर ध्यान रखने वाली होनी चाहिए |

7.3.3 विद्यालय में एसयूपीडब्ल्यू के कार्यान्वयन हेतु व्यूह रचना

[Strategies for Implimentation of SUPW in School]

एसयूपीडब्ल्यू के कार्यान्वयन हेतु प्रमुख तार्किक एवं उपयोगी चरण निम्नलिखित हैं -

1) विद्यालय में विद्यमान संसाधनों का सर्वेक्षण |

2) समुदाय का सर्वेक्षण |

3) प्रमुख विद्यालय नियोजकों से वार्तालाप |

4) प्रत्येक विद्यार्थी के एसयूपीडब्ल्यू में भागीदारी तथा उनमें प्रगति से संबंधित लिखित विवरण तैयार करना |

5) विद्यार्थियों द्वारा किए गए कार्यों का आन्तरिक मूल्यांकन |

7.4 विद्यालय में समाजोपयोगी कार्यों का मूल्यांकन

[Evaluation of SUPW in School]

एसयूपीडब्ल्यू क्रियाकलापों का विद्यालयों में आकलन क्रियाकलापों का आकलन करते समय निम्नलिखित बिंदुओं का ध्यान रखना आवश्यक है-

1. विद्यार्थियों की आयु |
2. कक्षा का स्तर |
3. विद्यालय का आकार एवं प्रकार |
4. विद्यालय का तात्कालिक वातावरण |

5. शिक्षण अधिगम बेहतर बनाने के लिए पर्याप्त समय अंतराल पर सदस्यों द्वारा क्रियाकलापों का मूल्यांकन किया जाए, जिससे अवरोधों को दूर किया जा सके |

6. जितना संभव हो सके क्रियाकलापों का मूल्यांकन उसी शिक्षक के द्वारा किया जाए जो कक्षा -कक्ष में क्रियाकलापों को आयोजित करते हैं |

7. एक त्रि बिंदु मापनी जैसे उत्कृष्ट, अच्छा, संतोषजनक अथवा 5 बिंदु मापनी जैसे उत्कृष्ट, अच्छा,संतोषजनक, निम्न, अति निम्न के आधार पर आकलन किया जाना चाहिए |

8. आकलन अन्य विषयों के समान लिखित रूप में न स्वीकार कर समझ तथा कार्य की निष्पत्ति के आधार पर किया जाए |

अध्याय – अष्टम

निष्कर्ष एवं सुझाव

[Conclusion and Suggestion]

अध्याय – अष्टम : निष्कर्ष एवं सुझाव

8.0 निष्कर्ष

[Conclusion]

शिक्षा वही है जो सर्वांगीण विकास में सहयोग दे, अर्थात शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, आध्यात्मिक, एवं कौशल का विकास करें | यह विचारणीय है कि क्या वर्तमान शिक्षा प्रणाली इन विभिन्न पक्षों का संतुलित विकास करती है या केवल एक पक्ष का? प्रस्तुत अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष उजागर हुए हैं-

1. वर्तमान शिक्षा प्रणाली ज्ञानात्मक पक्ष पर अधिक बल देती है भावात्मक एवं कौशलात्मक लक्ष्य उपेक्षित स्थिति में हैं |
2. विद्यालयी पाठ्यचर्या में सह-पाठ्यगामी क्रियाओं के आयोजन के प्रति शिक्षकों का दृष्टिकोण उदासीनतापूर्ण है |
3. विद्यालयी पाठ्यक्रम में सम्मिलित **'नैतिक खेल एवं शारीरिक शिक्षा'** तथा **'आलेखन कला'** की विषय वस्तु को व्यावहारिक रूप नहीं दिया जाता है |
4. शिक्षकों का संपूर्ण ध्यान विषय आधारित शिक्षा देने के प्रति रहता है, विद्यार्थियों की आंतरिक प्रतिभाओं को उभारने के प्रयास नगण्य है |
5. शासकीय विद्यालयों की स्थिति अशासकीय विद्यालयों की अपेक्षा अधिक दयनीय है | वहाँ का शिक्षण अधिगम वातावरण अप्रभावी एवं निम्न है शिक्षकों में शिक्षण कौशल तथा शिक्षण प्रक्रिया को बेहतर बनाने के लिए किए जाने वाले प्रयास श्रेयस्कर नहीं हैं |

8.1 अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता

[Educational Utility of Study]

जीवन में संतुलन आवश्यक है तथा संतुलित जीवन के लिए कला पक्ष का विकास होना आवश्यक है | प्रत्येक विद्यार्थी अपने में अद्वितीय है, प्रतिभा संपन्न है | यह परिवार, शिक्षकों एवं समाज की जिम्मेदारी है कि उन्हें बेहतर अवसर उपलब्ध कराए ताकि उनकी प्रतिभा का विकास हो सके जिससे उनके गुणों से सामाज लाभान्वित हो सके | विद्यालय को विद्यार्थियों की निर्माणशाला माना जाता है तथा शिक्षकों को निर्माता | अतः परिवार एवं समाज की दृष्टि विद्यालयों पर रहती है | विद्यालय का कक्षा-कक्ष विभिन्नता युक्त संक्षिप्त समाज है जिसमें सभी विद्यार्थियों को एक समान शिक्षा प्रणाली के साथ-साथ यह आवश्यक है की व्यक्तिगत विभिन्नता का ध्यान रखते हुए कुछ समाजोपयोगी एवं उत्पादक क्रियाकलापों का आयोजन किया जाए |

कक्षा में विद्यार्थियों के समूह बनाएँ जाए तथा उन्हें उनकी रुचि एवं योग्यता के अनुसार छोटे-छोटे कार्य सौपें जाए, जैसे वृक्षारोपण, विद्यालय स्वच्छता कार्यक्रम, पेपर एवं गत्ते से नवीन वस्तु निर्माण, अनुपयोगी वस्तुओं का पुनः चक्रण एवं उपयोग तथा गुणात्मक प्रतियोगिताओं का आयोजन आदि | ऐसे विभिन्न क्रियाकलाप विद्यार्थियों में विद्यालय के प्रति आकर्षण को बढ़ाते हैं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को रुचिपूर्ण एवं मनोरंजनात्मक बनाते हैं |

प्रस्तुत अध्ययन में ऐसे ही कुछ उपयोगी एवं उत्पादक कार्यों का समावेश किया गया है जो एक तरफ कक्षा कक्ष के बोझिल वातावरण को रुचिपूर्ण बनाते हैं दूसरी तरफ यह कार्य गुणात्मक, उपयोगी, उत्पादक तथा कार्य कौशल को बढ़ाने वाले हैं | विद्यालय पाठ्यचर्या में इन क्रिया कलापों के समावेश से विद्यार्थियों में सामंजस्य, सामूहिकता, सहयोग, सौहार्द एवं मैत्री की भावना का विकास होगा | विद्यार्थियों में पुनः चक्रण, पुनः निर्माण तथा पुनः उपयोग की अवधारणा के प्रति समझ विकसित होगी |

प्रस्तुत अध्ययन विद्यालयी पाठ्यचर्या के समीक्षात्मक पुनरावलोकन तथा पाठ्यक्रम में अतिरिक्त सह-पाठ्यगामी क्रियाओं के समावेशन पर आधारित है | शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को बेहतर एवं प्रभावी बनाने के लिए सप्ताह में 2 दिन जैसे गुरुवार एवं शनिवार को विभिन्न क्रियाकलापों का आयोजन किया जाना आवश्यक है तभी विद्यार्थियों की आंतरिक प्रतिभा निखर सकेगी एवं उनका सर्वांगीण विकास हो पाएगा |

8.2 भावी अध्ययन हेतु सुझाव

[Suggestations for Further Study]

समय एवं साधनों के अभाव ने प्रस्तुत अध्ययन को सीमित कर दिया है अन्यथा हर विषयवस्तु एवं समस्या अपने आप में विस्तृत है | शोधार्थी ने समस्या के समाधान हेतु सीमित पहलुओं पर दृष्टिपात किया है, जिसके परिणाम स्वरुप कई अन्य उपयोगी पहलू अध्ययन के प्रभाव क्षेत्र से अछूते रह गए | यह विश्वास किया जाता है कि भविष्य में इस क्षेत्र में अध्ययन करने वाले शोधार्थी उन पहलुओं को अपने अध्ययन में अवश्य शामिल करेंगे | उनके द्वारा किया गया अध्ययन शिक्षा के क्षेत्र में दूरगामी परिणामों के साथ एक नवीन संकल्पना के रूप में उजागर होगा |

भावी शोधार्थियों से आशा की जाती है कि वह भविष्य में अपने अध्ययन में निम्नलिखित क्षेत्रों को शामिल करेंगे-

1. प्रस्तुत अध्ययन 'अतर्रा' क्षेत्र के 3 विद्यालयों तक सीमित है, भावी शोधार्थी अन्य क्षेत्रों के विद्यालयों को अध्ययन में शामिल कर अध्ययन को अधिक उपयोगी एवं प्रभावी बना सकते हैं |
2. प्रस्तुत अध्ययन मुख्यतः बालिका इण्टर कॉलेज में अध्ययनरत बालिकाओं द्वारा किए गए क्रियाकलापों तक सीमित है, भविष्य के शोधार्थी ऐसे क्रियाकलापों को इसमें शामिल करें जो बालक-बालिका के लिए उपयोगी एवं सार्थक हो |
3. प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में माध्यमिक स्तर की बालिकाओं को लिया गया है भावी शोधार्थी उच्च प्राथमिक स्तर एवं उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को शामिल कर सकते हैं |
4. प्रस्तुत अध्ययन समाजोपयोगी उत्पादक कार्य के क्षेत्रों में से एक क्षेत्र 'पुनर्निर्माण' पर आधारित है | भावी शोधार्थी इसके अन्य क्षेत्रों को भी अध्ययन में शामिल कर सकते हैं |
5. प्रस्तुत अध्ययन कागज/पेपर एवं गत्ते से निर्मित समाजोपयोगी के निर्माण तक सीमित है | भविष्य के शोधार्थी इसमें जूट, सरकण्डा, प्लास्टिक बोतल, अनुपयोगी वस्तु से निर्मित नवीन वस्तु निर्माण को शामिल कर सकते हैं |

इस प्रकार समाजोपयोगी उत्पादक कार्य की अवधारणा अत्यन्त विस्तृत है | **जॉन डीवी** ने विद्यार्थियों में सामाजिक कौशल के विकास पर बल दिया | बच्चें समाज से निकलकर विद्यालयों में जाते है तथा पुनः विद्यालयों से निकलकर समाज में जिम्मेदार नागरिक के रूप में संस्कृति को सुरक्षित रखते है, यथासम्भव परिमार्जन करते है तथा भावी पीढ़ी को हस्तान्तरित करते है | अतः विद्यालयों से अपेक्षा की जाती है कि वें विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए समुचित अवसर उपलब्ध करायेंगे |

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[Bibliography]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- पाण्डेय; रामशकल | *उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा* | आगरा : अग्रवाल प्रकाशन; 2012 |
- सिंह; रामपाल, शर्मा; ओ० पी० | *शैक्षिक अनुसन्धान एवं सांख्यिकी* | अजमेर, 2004 |
- सिंह; वीर प्रकाश | *शासकीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों एवं अशासकीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन* | अतर्रा : अतर्रा महाविद्यालय, अतर्रा (बाँदा) 2015 |
- CBSE. *Socially Useful Productive Work – Guidelines for Teachers.* New Delhi : Central Board of Secondary Education, 1979.
- Chaudhuri; S.C. *Socially Useful Productive Work in Secondary Teacher Education*, New Delhi : NCERT (National Council of Educational Research and Training, 1985.
- Chaudhuri; S.C. *Socially Useful Productive Work in Elementary Teacher Education*, 1987 .
- Government of India. *Ministry of Education and Social Welfare. Report of the Review Committee on the Curriculum for the Ten-Year School.* New Delhi: Ministry of Education and Social Welfare, 1977.
- Government of India. Ministry of Education. *Challenge of Education- A Policy Perspective.* New Delhi; Ministry of Education, 1985.
- Government of India. *Minister of Education, Education and National Development.* Report of the Education Commission (1964 -66), New Delhi: Ministry of education, 1966.

- Government of India, Ministry of Education. *National Policy on Education*. New Delhi; Ministry of education, 1968.
- Government of India. Minister of Education. *Report of the secondary Education Commission (1952 – 53)* New Delhi: Ministry of Education, 1953.
- Government of India. *Ministry of Human Resource Development (1986). National Policy of Education – Programme of Action ()*. New Delhi: Ministry of Human Resource Development, 1986.
- Kochar; S.K. *Pvotal Issues in Indaia.* New Delhi : Sterling Publishers Pvt. Ltd. ISBN 8120700732, 1984. Reffered in Webliography, 16.
- Position Paper. *Work and Education*. New Delhi : NCERT, 2007. Reffered in Webliography, 15.
- Rashtreeya; Tarun. *Vocational Education*. New Delhi : APH Publishing. ISBN 817648864X (2007). Reffered in Webliography, 18.
- Ruhela; Satyapal. *Work Experience Education*. New Delhi : Diamond Pocket Books (P) Ltd. ISBN 8128812114, 2007. Reffered in Webliography, 17.
- Swain; Bimal Charan. *Socially Useful Productive Work Programme at Secondary Stage in Himachal Pradesh : An Evaluative Study*. Shimla : Himachal Pradesh University, 1992. Reffered in Webliography, 19.

Webliography

Webliography

1) https://www.youtube.com/watch?v=nUiN9JBpqzA
2) https://www.youtube.com/watch?v=qpOQHB-c9-k&t=61s
3) https://www.youtube.com/watch?v=W8WOK5IMNcA&t=12s
4) https://www.youtube.com/watch?v=JYA-ZkeZzTo&t=2s
5) https://www.youtube.com/watch?v=iqSu26dDlMo&t=1s
6) https://www.youtube.com/watch?v=LM5foh4WyzQ&t=22s
7) https://www.youtube.com/watch?v=mNtXSeIDUxE
8) https://www.youtube.com/watch?v=lCk3WcIZbEE
9) https://www.youtube.com/watch?v=pAHleWjRhEM&t=70s
10) https://www.youtube.com/watch?v=INaqSqyWEWE&t=203s
11) https://www.youtube.com/watch?v=I8xQwt-roJM
12) https://www.youtube.com/watch?v=EwFiMg8iaCo&t=63s
13) https://www.youtube.com/watch?v=vVpZN4XD_YM&t=21s
14) https://www.youtube.com/watch?v=E_MIkHFiWaU&t=4s
15) http://www.ncert.nic.in/new_ncert/ncert/rightside/links/pdf/focus_group/workeducation.pdf
16) https://books.google.co.in/books?id=iz_A45Rj61kC&pg=PA147&dq=Socially+Useful+Productive+Work+SUPW&hl=en&sa=X&ei=

CyjYT7ysGsvirAfR4YDMDw&redir_esc=y#v=onepage&q=Socially%20Useful%20Productive%20Work%20SUPW&f=false

17) https://books.google.co.in/books?id=g1jqgc5vDuEC&pg=PA20&dq=Socially+Useful+Productive+Work+SUPW&hl=en&sa=X&ei=CyjYT7ysGsvirAfR4YDMDw&redir_esc=y#v=onepage&q=Socially%20Useful%20Productive%20Work%20SUPW&f=false

18) https://books.google.co.in/books?id=v8yVSj62ma4C&pg=PA85&dq=Socially+Useful+Productive+Work+SUPW&hl=en&sa=X&ei=CyjYT7ysGsvirAfR4YDMDw&redir_esc=y#v=onepage&q=Socially%20Useful%20Productive%20Work%20SUPW&f=false

19) http://shodhganga.inflibnet.ac.in:8080/jspui/handle/10603/124022

20) http://chinchukr21.blogspot.com/2013/06/dr-s-radhakrishnans-educational-ideas.html

21) http://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/29975/12/12_chapter%205.pdf

22) http://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/12164/11/11_chapter%204.pdf

23) http://www.teachersofindia.org/hi/article/%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%B7%E0%A5%8D%E2%80%8D%E0%A4%9F%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A5%80%E0%A4%AF-%E0%A4%AA%E0%A4%BE%E0%A4%A0%E0%A5%8D%E0%A4%AF%E0%A4%9A%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%AF%E0%A4%BE-2005-%E0%A4%95%E0%A5%8D%E2%80%8D%E0%A4%AF%E0%A4%BE-%E0%A4%95%E0%A4%B9%E0%A4%A4%E0%A5%80-

%E0%A4%B9%E0%A5%88-%E0%A4%8F%E0%A4%95-
%E0%A4%A8%E0%A4%9C%E0%A4%B0-
%E0%A4%AE%E0%A5%87%E0%A4%82

" शिक्षा हमारे समाज की आत्मा है
जो कि एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी
जाती है "
ISBN 978-93-5473-086-3
9 789354 730863 >